विश्व समभाव दिवस

—7 सितम्बर, 2018—

SATYUG DARSHAN TRUST (REGD.)

प्रकाशक
सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.)
"वसुन्धरा" ग्राम भूपानी–लालपुर रोड फरीदाबाद–121002 (हरियाणा)
ई–मेलः info@satyugdarshantrust.org
website: www.satyugdarshantrust.org
© सर्वाधिकार सुरक्षित सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.)
ISBN : 978-93-85423-19-2

प्रथम संस्करण
अप्रैल, 2019

विश्व
समभाव दिवस

—7 सितम्बर, 2018—

Invitation released in mass media publications

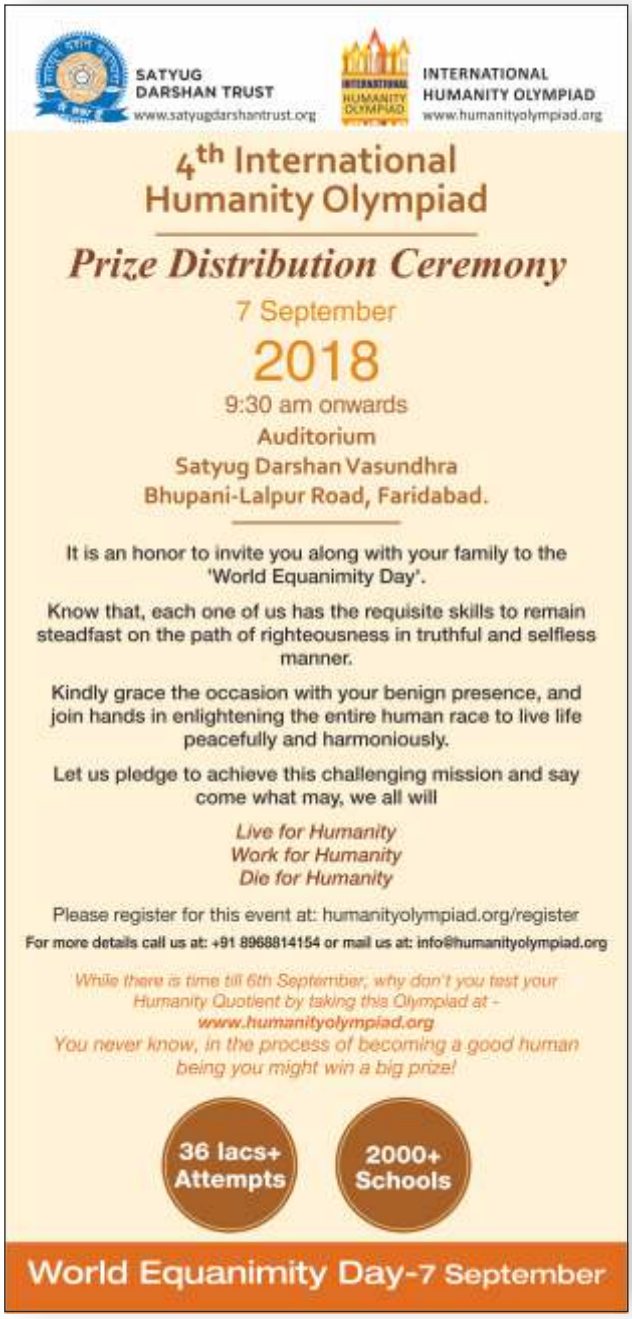

Invitation Card

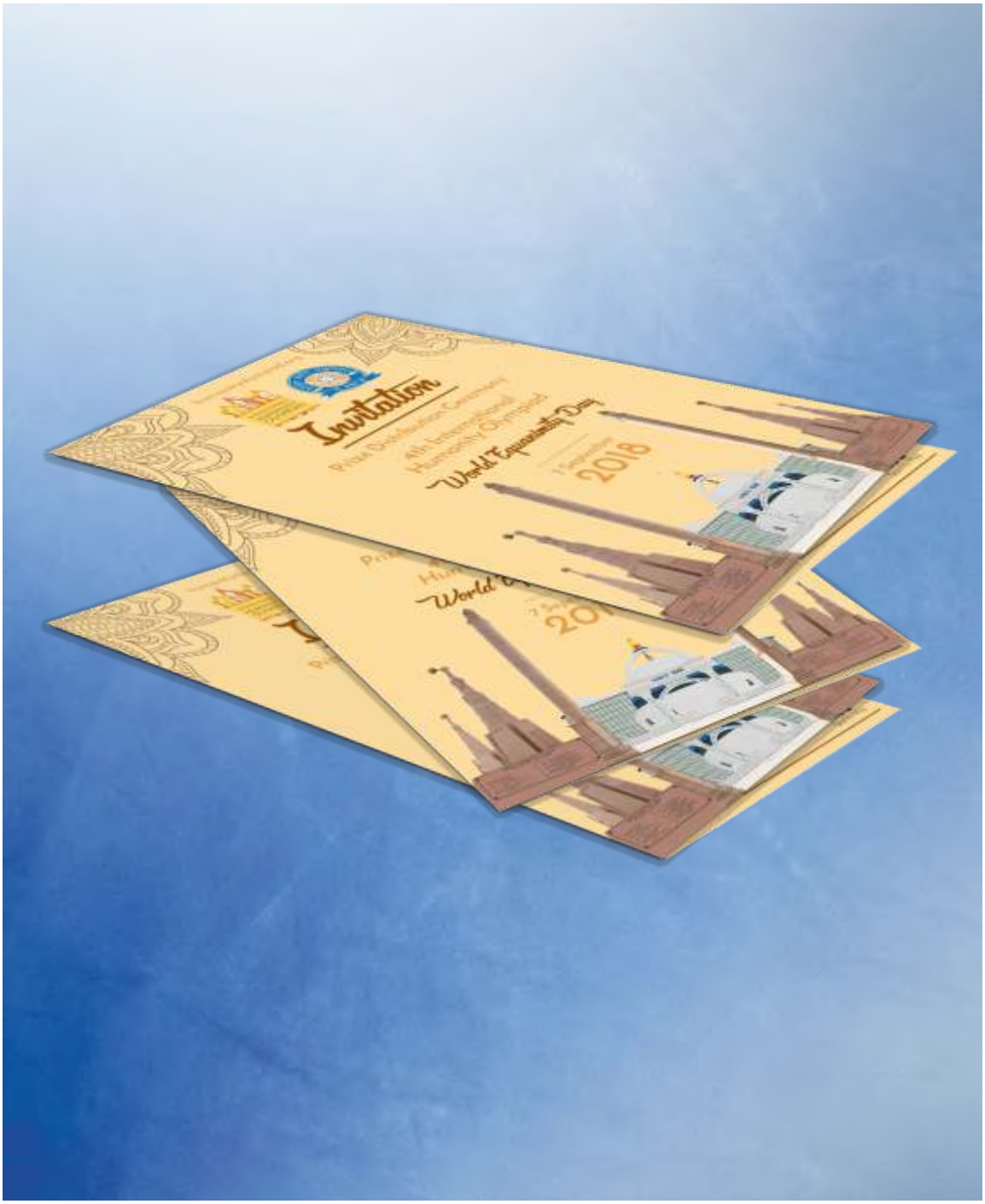

Humanity Olympiad 2018 - Information Booklet

सजन जी

स्वागतम्, स्वागतम्, स्वागतम्
समभाव दिवस पर उपस्थित सभी सजनों का शुभ स्वागतम्।

इससे पहले कि सजनों कार्यक्रम को आगे बढ़ाएँ हमारी सब उपस्थित सजनों से करबद्ध प्रार्थना है कि प्रोग्राम के दौरान सब अपने-अपने स्थान पर सीधे बैठने का पुरुषार्थ दिखाएं ताकि आपका ख़्याल ध्यान स्थिर हो जाए और जिस समभाव-समदृष्टि के सबक़ के प्रति आज हम आपको जाग्रत करने जा रहे हैं वह युक्ति आपकी स्मृति में ही नहीं बल्कि आपके रोम-रोम, रग-रग में प्रवेश कर, आपको वास्तविक रूप से एक श्रेष्ठ मानव बनने का पराक्रम दिखाने की योग्यता प्रदान करे। अब बताओ सजनों कि आज क्या है?

सभीः- विश्व समभाव दिवस।

सजन जीः- विश्व समभाव दिवस, तो आओ मिल कर बोलेंः-

समभाव दी होसवे फतह, समभाव दी होसवे फतह, समभाव दी होसवे फतह।

करो।

लियाओ।
दिल में
अमल
लिया के
सजनो,
दिल में
अमल कमाओ,

आओ अब हम सब मिलकर बोलें
सातवीं सितम्बर उन्नीस सौ बवन्झा
रविवार सतवस्तु दा राज हुन हो गया,
वेखसी कुल जहान सतवस्तु दा राज हुन हो गया।।

पहला एंकरः- याद रखो सजनों समभाव अपनाकर ही हम सब मानवता में आ सकते हैं।

दूसरा एंकरः- अच्छा जी, तो आओ फिर मानव धर्म अपनाने के प्रति दृढ़-संकल्पित होने के लिए ध्यान से सुनते हैं कि ईश्वर का दूत हमारे लिए क्या संदेशा ले कर आया हैः-

पात्रः- **काल-चक्र कर रहा है, सतवस्तु में प्रवेश।**
समभाव-समदृष्टि धार, ए कौतुक देखेगा कोई मानव विशेष।।

अतः

समभाव-समदृष्टि होकर परस्पर सजन भाव अनुसार व्यवहार करने का संकल्प लें, आओ करें

सब मिलकर सतयुग का स्वागत, स्वागत, स्वागत।।

इस हेतु सजनों समभाव रूपी हीरा धारण करने व कलियुगी भाव-स्वभाव त्यागने का संकल्प लो ताकि सहजता से मानवता के प्रतीक बन सको व सतवस्तु में प्रवेश पा श्रेष्ठ मानव कहला सको। इस संदर्भ में अब ध्यान से सुनो कि नियति अनुसार सृष्टि रचना का यह सारा खेल किस प्रकार चलता हैः-

सजनों पुराणों के अनुसार जगत युगांतरों के निरंतर चक्र से गुज़रता रहता है। ठीक निश्चित समय के बाद इस संसार का पुनः सृजन होता है। ब्रह्माण्ड के सृजन और विनाश की यह क्रिया ठीक काल-चक्र में होने वाले ऋतुओं के परिवर्तन की भाँति ही बनती और बिगड़ती रहती है। ग्रीष्म, वर्षा, शरद, शीत, हेमन्त व बसंत ऋतुओं की भाँति ही प्रत्येक युग में धीरे-धीरे जटिल क्रमिक परिवर्तन होते हैं जिससे प्रभावित होकर पृथ्वी व प्रत्येक प्राणी की अंतर्चेतना को सम्पूर्णतया पूर्वनिर्धारित प्रक्रिया से गुज़रना पड़ता है। काल-चक्र के स्वर्णिम प्रकाशमय युग से अंधकारमय युग तक तथा पुनः अंधकारमय युग से सुनहरे युग तक पहुँचने के अन्तराल में हुए परिवर्तन का मुख्य कारण सूर्य यानि केन्द्र-बिन्दु के इर्द-गिर्द हमारे सौरमण्डल की गति में हुए परिवर्तन होते हैं। इस प्रकार सृष्टि के सृजन के उपरान्त क्रमशः सतयुग, त्रेता, द्वापर व कलियुग तथा कलियुग के पश्चात् सतयुग आना सुनिश्चित होता है।

पात्रः- तभी तो ईश्वर कहते हैंः-

विराट नगरी उस परमपिता परमात्मा दे गर्भ में सुहाए।
उदय हुआ फुरना फुरने दी सृष्टि प्रगट कर के दिखाए।"

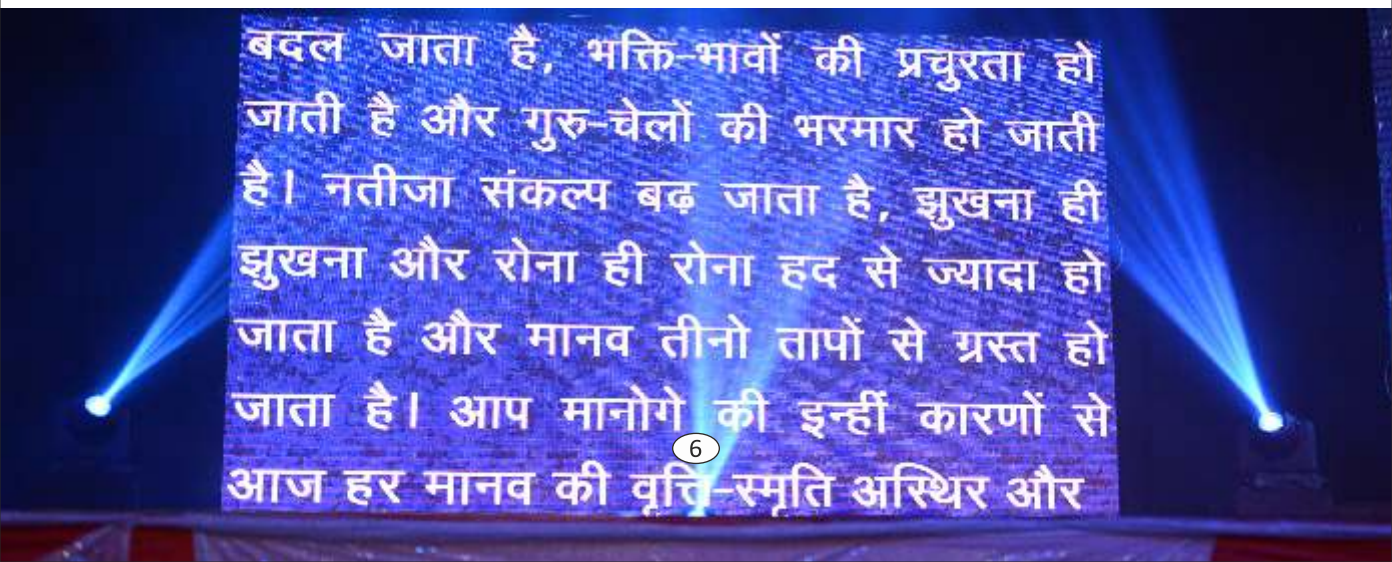

इस संदर्भ में सजनों जानो कि सृष्टि रचना के आरम्भिक काल -- सतयुग में पुण्य के चार पाद होते हैं इसलिए यह युग सबसे उत्तम माना जाता है। इस युग में पुण्य और सत्यता की अधिकता रहती है इसलिए सभी सच्चरित्र व धर्मात्मा होते हैं। सतयुग में जीवन यापन की प्रणाली का आधार परमार्थ होता है तथा ज्ञान का स्रोत आत्मज्ञान होता है। इस युग में समभाव-समदृष्टि महान होती है तथा निष्काम भाव से केवल ईश्वरीय हुक्म की सुदृढ़ता से पालना होती है व सजन भाव का वर्त-वर्ताव होता है क्योंकि हर सजन उच्च बुद्धि व उच्च ख़्याल होता है।

पात्रः- इसी महत्ता के दृष्टिगत ही सजनों ईश्वर कहते हैंः-

सतवस्तु दी सजनों चाल चलो, सतवस्तु दे वचन इस्तेमाल करो।।
सतवस्तु दे असूलां नू फड़ो सजनों, सत सत वचनां नाल प्यार करो।।

फिर स्वभावों में तबदीली के कारण जैसे ही मानवों के मन में संकल्प पैदा होता है तो वह अवस्था युग के पतन का कारण बनती है और आ जाता है त्रेता युग। इस युग में पुण्य के तीन पाद और पाप का एक पाद होता है और सब लोग धर्मपरायण होते हैं। ईश्वर तथा मानवीय सम्बन्ध द्वि-भाव युक्त होते हैं यानि परमार्थ के साथ-साथ स्वार्थ का उदय हो जाता है और भक्ति का प्रारूप सेवक-स्वामी वाला हो जाता है। संकल्प अस्वच्छ होना शुरु हो जाता है। संकल्प के अस्वच्छ होने पर झुखना शुरु और रोना उग पड़ता है अर्थात् वृत्ति-स्मृति की निर्मलता भंग हो जाती है। समय के साथ-साथ जैसे-जैसे मानवों के मन में संकल्प बढ़ जाता है तो इन्सान की यही अवस्था युग के पतन का कारण बनती है और आ जाता है द्वापर युग। इस युग में पुण्य के दो पाद और पाप के भी दो पाद होते हैं। इस प्रकार धर्म आदि में घटती होने के कारण पाप कर्मों के फल प्राप्त होने शुरू हो जाते हैं। स्वार्थपरता बढ़ जाती है और भक्ति का प्रारूप भक्त-भगवान वाला हो जाता है। कर्मकांडों का उदय हो जाता है। सांसारिक सुख-संसाधनों में बढ़ोतरी होने के कारण अमीर-गरीब, वड-छोट, तेरी-मेरी का भाव मन में पैदा हो जाता है और मानव विकार-वृत्तियों का शिकार हो जाता है। इस प्रकार मन चंचल हो जाता है व चित्त की एकाग्रता भंग होने के कारण अज्ञान पनप जाता है व इन्सानों की बुद्धि भ्रमित हो जाती है। इस प्रकार मानवों का स्वभाव अधम अवस्था को प्राप्त हो जाता है और उसकी पकड़ से सच्चाई-धर्म का निष्काम रास्ता छूट जाता है। इस युग के पतन का कारण संकल्प के बढ़ने के साथ-साथ झुखने और रोने का बढ़ जाना होता है। परिणामतः काम/कामना का बोलबाला हो जाता है व मन में काम

के परिवार क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि का आधिपत्य छा जाता है जिससे मानसिक शांति समूलतः भंग हो जाती है। इस प्रकार आ जाता है कलियुग। इस युग में पुण्य का एक पाद और पाप के तीन पाद होते हैं। कलियुग में उत्पन्न होने वाले कुप्रवृत्त यानि बुरी और नीच प्रवृत्ति वाले, निंदा के योग्य कुपुत्र होते हैं जिनका संकल्प कुसंगी होता है। तभी तो वे पापी व दुराचारी होते हैं व भौतिकवादी बन अपने अस्तित्व के शारीरिक पहलू तक ही सीमित रहते हैं और गुरुमत के स्थान पर मनमत को बढ़ावा देते हैं। इसलिए यह युग पापयुग व कलह युग कहलाता है।

पात्रः- इसीलिए तो सजनों ऐसे कलियुगवासियों के विषय में ईश्वर कहते हैंः-

भेजया हाई तैनुं सच वणजन नूं, झूठ दा कीता हेई व्यापार।
डरदा होया मेरे निकट न आवे, भुलयां फिरे गँवार,
ए जिन्दगी तेरी सदा नहीं रहनी, इस नूं लवीं संवार।
जन्म दी मौज न माणी, जन्म दी मौज न माणी।।

सजनों यह स्थिति वर्तमान युग के इन्सानों के बुरे व पतित भाव-स्वभावों से साक्षात् परिलक्षित होती है। इसलिए तो आज का मानव अविचार युक्त होकर ईश्वर को अपने से अलग मानता/जानता है तथा कुल दुनियां में उसे खोजता है या नास्तिकता को प्रधानता देता है। इस तरह भक्ति का प्रारूप बदल जाता है, भक्ति-भावों की प्रचुरता हो जाती है और गुरु-चेलों की भरमार हो जाती है। नतीजा संकल्प बढ़ जाता है, झुखना ही झुखना और रोना ही रोना हद से ज्यादा हो जाता है और मानव तीनों तापों से ग्रस्त हो जाता है। आप मानोगे कि इन्हीं कारणों से आज हर मानव की वृत्ति-स्मृति अस्थिर और अशांत हो गई है, दृष्टि की कंचनता भंग हो गई है और जिह्वा की स्वतन्त्रता समाप्त होने से निन्दा-चुगली, गाली-गलौज युक्त कर्कश, कठोर, अशिष्ट व अश्लील शब्दों का प्रयोग हो रहा है। सजनों निःसंदेह यह सब मनुष्य के स्वभावों की पवित्रता भंग होने का प्रतीक है अर्थात् आज मानव सच्चाई धर्म का निष्काम रास्ता छोड़ मनमत अनुसार छल-कपट करते हुए अशिष्टता का व्यवहार कर रहा है। परिणास्वरूप शारीरिक-मानसिक स्वस्थता का ह्रास हो गया है और इन अनैच्छिक परिवर्तनों के कारण मानव जाति खंड-खंड हो गई है। इस तरह मानव अच्छे से बुरा अर्थात् मानव से दानव बन गया है। चूंकि सजनों अब कलियुग के बाद पुनः सतयुग आना है इसलिए अब हमें पुनः बुरे से अच्छा बनना है यानि समभाव-समदृष्टि की युक्ति अनुसार सतयुगी नैतिकता व आचार-संहिता अपना कर पुनः सजन भाव का प्रसार

करना है व सत्-वादी बन एकता, एक अवस्था में आना है।

पात्रः- सजनों यदि हकीकत में ऐसे श्रेष्ठ इंसान बनना चाहते हो तो फिर ईश्वर के कथनानुसारः-

'धर्म मत हारना रे, धर्म मत हारना रे।
धर्म के ऊपर सजनों तन-मन-धन सब वारना रे।'

इस संदर्भ में जानो कि समभाव-समदृष्टि--यही एकमात्र युक्ति है जिसके प्रयोग द्वारा हमारा संतोष और धैर्य सबल हो सकता है और हम सच्चाई और धर्म की राह पर निष्कामता से अग्रसर हो अपना जीवन पथ सुगम बना, अपने जीवन का प्रयोजन समयबद्ध सिद्ध कर मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं। तो क्या हम मानें कि आप सब ऐसा मानव बनने के लिए तैयार हो जी ?

सारेः- हाँ जी।

तो फिर कलियुग की घोर निद्रा से जागो और जागृति में आ पुनः निर्विकारी व परोपकारी बनो।

पात्रः- ऐसा इसलिए भी करो क्योंकि ईश्वर कहते हैं :-

स्वर्णिम प्रभात आ है रहा, अब तो आँखें खोलो जी।
दिव्य प्रकाश है सर्व छा रहा, अब तो आँखें खोलो जी।।

अंत में सभी उपस्थित सजनों से करबद्ध प्रार्थना करते हैं कि इस युग परिवर्तन के सत्य को धारण करो और कलुकाल के मंदे भाव-स्वभाव छोड़, सतवस्तु के निर्मल भाव-स्वभाव अपना पुनः एकता में आ जाओ और इस प्रकार परमेश्वर के सुपुत्र बन भारत माता को हर्षा दो।

पात्रः- इसी संदर्भ में सब मिलकर बोलोः-

भारत माता की जय, भारत माता की जय, भारत माता की जय।
मानव धर्म ज़िन्दाबाद, मानव धर्म ज़िन्दाबाद, मानव धर्म ज़िन्दाबाद।।

ऐसा पुरुषार्थ दिखा कर सजनों अपने पर उपकार करो तथा औरों को भी इसी निष्काम पथ पर अग्रसर कर उनके भी जीवन आबाद कर दो और ए विध परोपकार कमा यश-कीर्ति प्राप्त करो। मानव जाति का ऐसा शुभ कर पाने हेतु सजनों परमेश्वर की बात मानो और दृढ़ संकल्प होकर बोलोः-

मैं सत्यार्थ इस जगत विच सच दी पट्टी लै के आया
सच ही पढ़ना, सच ही गुढ़ना, उस रब ने समझाया
सच पढ़न गुढ़न दे मगरों, सच ही वन्डना सिखाया
मैं सत्यार्थ इस जगत विच सच दी पट्टी लै के आया

पहला एंकरः- भई वाह यह देख-सुनकर तो मजा आ गया।

दूसरा एंकरः- मजा तो आ गया, क्या ईश्वर के दूत की पोशाक का रहस्य भी जानते हो?

पहला एंकरः- नहीं वह तो नहीं पता।

दूसरा एंकरः- तो जानो कि जहाँ बैहरूनी रूप में उस द्वारा धारण किया हुआ सफेद रंग श्रद्धा, विश्वास, बोध, शांति, स्वच्छता, उत्तमता, सच्चाई, शुचिता व दिव्यता का प्रतीक होने के कारण उसके निष्कलंक, सरल, स्पष्ट व सुन्दर होने का सत्य जनाता है वहीं दुपट्टे के रूप में गले में धारण किया हुआ गुलानारी रंग जो चारों वर्णों की एकता का प्रतीक है वह ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र तथा हिंदु, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आदि सभी प्रकार के भिन्न-भेद मिटाकर, सबको शारीरिक बंधन से मुक्त हो, एक ही आत्मा के रंग में रंगकर एकभाव होने की सूचना देता है। अतः सजनों यदि हकीकत में ईश्वर के कर्त्तव्यपरायण सुपुत्र बनना चाहते हो तो वड-छोट, जाति-भेद, रंग-भेद, धर्म-भेद मिटाकर व समस्त आडम्बरयुक्त चलन त्याग कर, सर्व एकात्मा के भाव में ढल जाओ और एकरूप हो परस्पर सजनता का व्यवहार करो अर्थात् सजन मानो, सजन जानो, सजन करो प्रवान,

इसी में है आपकी शान।

पहला एंकरः- इस पोशाक की महिमा तो हकीकत में अद्वितीय है।

दूसरा एंकरः- यह तो आपने उसकी शारीरिक सुन्दरता को बढ़ाने वाली पोशाक के विषय में जाना, अब अन्दरुनी चारित्रिक सुन्दरता को बढ़ाने वाली पोशाक के विषय में भी ध्यानपूर्वक जानो कि ईश्वर का दूत यानि उसका कर्त्तव्यपरायण सुपुत्र जीवन की हर परिस्थिति में संतोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म जैसे दिव्य स्वाभाविक गुणों की पोशाक को धारण किए रहता है व इस तरह 'विचार ईश्वर है अपना आप' के भाव पर सुदृढ़ता से बने रह एक सत्यार्थ इंसान की तरह एकता, एक अवस्था में समरूपता से स्थिर बना रहता है। इसीलिए तो वह आत्मज्ञानी इस जगत में एक समर्थवान इंसान की तरह आत्मिक भाव से विचरता है और उसकी सोच में, उसकी वाणी में व करनी से सत्य ही प्रदर्शित होता है। इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों अपने मन में भी इस दिव्य परमार्थिक धुर से आई हुई पोशाक को धारण करने के प्रति उत्साह व उमंग पैदा करो और अपनी वास्तविक बनत के अनुरूप यथार्थतः मानव-धर्म अनुसार इस मृतलोक में प्रसन्नतापूर्वक विचरते हुए, अपने घर परमधाम पहुँच विश्राम को पाओ। जानो यही है एक नेक व भले इंसान की पहचान। अतः सब ऐसे बनो, हाँ सब ऐसे बनो और ऐसे बनकर ही सतयुग में प्रवेश करो व इस तरह जन्म-मरण की त्रास से बच भवसागर पार हो जाओ।

एंकरः- इन्हीं शुभकामनाओं के साथ आओ सजनों अब मिलकर दिल से बोलते हैंः-

समभाव अपनाएंगे और मानवता में आएंगे।
ए विध् मानवता में आ, चरित्रवान बन जाएंगे।

दूसरा एंकरः- वाह भई वाह.....यह तो अति शुभ संकल्प है।

पहला एंकरः- जी हाँ, यह तो है, पर क्या जानते हो कि दुष्चरित्रता से उबर चरित्रवान बनने के लिए कौन-कौन से बुरे भाव-स्वभाव छोड़ने होते हैं व कौन-कौन से सद्भाव-स्वभाव धारण कर तद्नुरूप परस्पर व्यवहार करना होता है?

दूसरा एंकरः- हैरानी से .....मौन।

पहला एंकरः- नहीं जानते न। तो ध्यान से सुनो कि दुष्चरित्रता से उबरने हेतु मोह-माया व

द्वि-द्वेष जैसे स्वभाव छोड़ने होते हैं और समभाव आधारित भाव-स्वभाव अपनाने होते हैं व युक्तिसंगत अमल में लाने होते हैं।

अब क्या आप जानना चाहते हो कि चरित्रवान बनने के लिए समभाव अपनाना क्यों आवश्यक है?

दूसरा एंकरः- मेरी उत्सुकता की और परीक्षा न लो.....कृपया मुझे जल्दी बताओ कि चरित्रवान इंसान बनने हेतु समभाव की क्या महत्ता है?

पहला एंकरः- इस संदर्भ में ध्यान से समझो कि जिस प्रकार हम अपनी बाह्य शान बढ़ाने या दर्शाने हेतु सबसे मूल्यवान वस्तु अर्थात् तराशे हुए हीरों को धारण करना आवश्यक समझते हैं, वैसे ही अपनी स्वाभाविक सुन्दरता पर परिपूर्ण निखार ला, अपना जीवन चरित्र सुन्दर व परम पवित्र बनाने के लिए अन्दरूनी वृत्ति में समभाव रूपी हीरा धारण करने की नितांत आवश्यकता होती है। ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि समभाव धारण करने पर, इंसान को हृदयगत वेद विदित स्वतः ही समझ आने लगती है। फिर ज्यों-ज्यों इंसान उस वेद विदित विचारों को धारण करता जाता है, त्यों-त्यों उसके बदन से खोट की सफाई होती जाती है और धीरे-धीरे उसका हीरा जड़त अर्थात् समभाव अस्थित हृदय खालस सोने की तरह चमकने लगता है।

दूसरा एंकरः- अच्छा तो इसलिए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में परमेश्वर कहते हैंः-

खालस सोना हो के आवे, मैं सागर विच टुब्बी लावे।
तदों हीरे दी सार ओ पावे हीरे नाल हीरा हो जावे।।
हीरे दी सार ओ पावे कोई विरला, हीरे नाल हीरा हो जावे कोई विरला।।

पहला एंकरः- बिलकुल ठीक समझा। आगे जानो कि जब इंसान अपना आचार-विचार व व्यवहार समभाव अनुरूप ढालने में सफल हो जाता है तो उसके मन-वचन-कर्म द्वारा, इस समभाव रूपी स्वाभाविक हीरे की रोशनी चमक सबके समक्ष प्रत्यक्ष होने लगती है और इस प्रकार इंसान अपना अनमोल जीवन सफल बना लेता है।

दूसरा एंकरः- इस महत्ता के दृष्टिगत ही सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हमें कह रहा हैः-

हीरा सजनों परखना जे, मिल करो हनुमान जी दा संग।
ओ३म् तत् सत् ब्रह्म, ओ३म् तत् सत् ब्रह्म।।

पहला एंकरः- आगे सजनों श्री साजन परमेश्वर हर कलुकालवासी को हीरे की सर्वव्यापकता से परिचित कराते हुए कहते हैं कि यद्यपि समभाव रूपी स्वाभाविक हीरे का हर घट में वास है तथापि फुरनों में जकड़े हुए इंसानों को उस सर्वनिवासी हीरे को पहचानने की युक्ति समझ में नहीं आती। इसी कारण वे समभाव की जगह द्वि-द्वेष जैसा निकृष्ट चलन अपना बैठते हैं और दुःखों को प्राप्त हो सदाचार के स्थान पर दुराचार करने लगते हैं। ऐसे सजनों को इस पतित अवस्था से उबारने हेतु ही सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ने समभाव की युक्ति बख़्शी है और इस युक्ति द्वारा समभाव रूपी स्वाभाविक हीरे की पहचान का तरीका समझाने के लिए समभाव-समदृष्टि का स्कूल खोला है ताकि हर मानव के मन से अंतर्द्वन्द्व समाप्त हो जाए और पुनः शांति स्थापित हो जाए। इसलिए तो सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है किः-

ओ झगड़े सारे मुक गए सजनों, समभाव जदों दा आया, समभाव जदों दा आया

दूसरा एंकरः- आओ अब इसी बात को सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ से उद्धृत कीर्तन 'हीरा मैं पाई ओ जावां' के माध्यम से समझते हैंः-

हीरा मैं पाई ओ जावां

हीरे दी वेद विदित सब नूं समझाई ओ जावां

हीरा जे खालस सोना, खोट न उस बदन में, खोट न उस बदन में

हीरे दी रौशनी चमक, सब नूं दिखाई ओ जावां, सब नूं दिखाई ओ जावां

हीरा है घट घट वासी हीरा है सर्व निवासी, हीरा है सर्व निवासी

हीरे दी पहचान दा तरीका,सब नूं समझाई ओ जावां, सब नूं समझाई ओ जावां

सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ने, समभाव दा तरीका समझाया,

समभाव दा तरीका समझाया

ओ झगड़े सारे मुक गये सजनों, समभाव जदों दा आया,

समभाव जदों दा आया

हीरा मैं पाई ओ जावां

हीरे दी वेद विदित सब नूं समझाई ओ जावां

पहला एंकरः- यह अनमोल बात सुनने के पश्चात् निश्चित रूप से आप सबके मन में, समभाव-समदृष्टि की युक्ति अनुसार सदाचारी बनने हेतु, सतयुग दर्शन वसुन्धरा पर समभाव-समदृष्टि के स्कूल के रूप में जो व्यवस्था कायम की गई है, उसका लाभ उठा कर पुनः चरित्रवान बनने के प्रति उत्कंठा पैदा हो गई होगी!

दूसरा एंकरः- जी हाँ बिलकुल ऐसा ही है।

पहला एंकरः- तो फिर अविलम्ब अपना चरित्रनायक खुद बनने हेतु जो सात्विक विचारों अनुसार सात्विक आचार-व्यवहार की युक्ति यहाँ से बताई जा रही है उसको दिलचस्पी से ग्रहण कर उत्तम चाल-चलन वाले अर्थात् नैतिक दृष्टि से अच्छा आचरण करने वाले सदाचारी, धर्मात्मा इंसान बन जाओ। जानो यही एकमात्र तरीका है दुःखद अवस्था से उबर सदा आनन्दमय एकरस अवस्था में बने रह प्रसन्नचित्तता से जीवन जी पाने का व श्रेष्ठ मानव कहलाने का।

Contentment
Endurance
Truthfulness
Righteousness
Equality
Selflessness
Benevolence
INTERNATIONAL
HUMANITY
OLYMPIAD
2018

दूसरा एंकर:- हम भी सजनों ऐसा करने में कामयाब हो सकें इस हेतु अब मैं सतयुग दर्शन के मार्गदर्शक श्री सजन जी से प्रार्थना करूँगी कि वह मंच पर आएँ और इस संदर्भ में हमारा उचित मार्गदर्शन करें:-

सजन जी

सभी उपस्थित सजनों को जय सीता राम जी।

समभाव के इस शुभ दिवस पर उपस्थित प्रत्येक सजन का हम इस पावन धरा सतयुग दर्शन वसुन्धरा पर पधारने पर हार्दिक अभिनंदन करते हैं। आज के दिवस की महत्ता व महानता को देखते हुए आओ सजनों समझते हैं कि हर मानव के लिए अपने यथार्थ स्वरूप में सदा एकरस बने रह मानवता के सिद्धान्त पर सुदृढ़ बने रहने हेतु, समभाव-समदृष्टि का सबक़ पढ़ना व उसका व्यावहारिक रूप गहनता से समझना, क्योंकर आवश्यक है?

इस संदर्भ में सजनों जानो कि आदि अनादि प्रमादि परमेश्वर ने जब इस सृष्टि में अपनी सर्वोत्कृष्ट कृति मानव रूप की रचना की तो उसे अपने निजी वास्तविक धर्म में सुदृढ़ता से स्थिर रहते हुए, सर्व कल्याण के निमित्त, एकता व एक अवस्था में बने रह, सब कुछ उचित ढंग से सत्यतापूर्वक कर पाने हेतु, समभाव-समदृष्टि के सबक़ अनुसार, समभाव नजरों में कर, समदर्शिता अनुरूप परस्पर सजनता का व्यवहार करने का कौशल बख़्शा, ताकि इस धर्म पथ पर समरस बने रह, वह इस जगत में, अपने मन-वचन-कर्म द्वारा सत्य को उजागर कर पाने का पराक्रम, सहजता से दिखा सके। इतिहास गवाह है सजनों कि जब तक सम्पूर्ण मानव जाति आत्मीयता में बने रहते हुए, इस धर्म पर खरी उतरी तब तक हर मानव दीप्तिमान अवस्था को प्राप्त रहा और उसकी चित्त वृत्तियों के निर्मल व शुभ होने के प्रभाव से परस्पर सम्बन्धों में प्रेम व सद्भावना बनी रही। तभी तो उस समय काल में मानव ने इसी धर्म के नीति-नियमों की मर्यादाओं में बने रहने की ख़ातिर अपना सब कुछ उस पर निछावर करना उचित समझा और इसी कारण वे वैष्णव जन कहलाए।

यहाँ वैष्णव का अर्थ है विष्णु का उपासक तथा भक्त। जानो सजनों तद्कालीन समय में उन वैष्णव जनों का जीवन अपने आराध्य यानि इस जगत के पालनकर्त्ता के प्रति पूरी तरह अर्पित था इसलिए वे केवल उनकी चरण-शरण में रह उनके गुण, ज्ञान व शक्ति को ग्रहण कर, एक सुपुत्र की तरह उनकी मति अनुसार ही, अपने इन तीनों बलों का प्रयोग निष्काम

भाव से करते हुए, इस जगत की पालना हेतु अपना वांछित सहयोग प्रदान करने में, आनन्द का अनुभव करते थे। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि वैष्णवत्व के भाव के प्रति स्नेह रखने वाले उन इंसानों के लिए अखंडता से समभाव पर स्थित रहना सहज था क्योंकि आत्मतुष्ट होने के कारण उन परिपूर्ण इंसानों के मन में कोई संकल्प नहीं उठता था और वे अपने कर्म पर पकड़ होने के कारण, अकर्ता भाव से सदा सुकर्म ही करते थे। यह तथ्य अपने आप में उनकी सत्य-धर्म के प्रति मजबूती दर्शाता है और वह समयकाल सतयुग कहलाता है।

इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों यह कहा जा सकता है कि समभाव ही एकमात्र ऐसा सशक्त भाव है जो हर मानव के हृदय में मानव-धर्म को उजागर करता है। इस अर्थ से यह मानव के यथार्थ धर्म का परिचायक है। इस धर्म पर स्थिर बने रहने वाले समभावी के हृदय में ही सदा सत्य प्रकट रहता है और इसी कारण उनके अन्दर सतोगुण प्रधान होता है। जानो इस गुण की प्रधानता के कारण जब इंसान की सुरत अपने इस वास्तविक धर्म पर समरस स्थित बनी रहती है तो ख़्याल स्वतः ही धर्म के रास्ते पर प्रशस्त रहता है और मन-वचन-कर्म द्वारा हृदय प्रकट सत्य को प्रतिष्ठित करता है। इस अवस्था में मन शांत अर्थात् संकल्प विकल्प रहित रहता है और चित्त सदा प्रसन्न रहता है। ऐसा अद्‌भुत होने पर मानव का ख़्याल ईश्वरीय अंतर्वाणी संग निरन्तर जुड़े रहने में ही आनन्द का अनुभव करता है और उस वाणी द्वारा प्राप्त होने वाले धर्मसंगत विचार/विद्या को इस प्रकार एकाग्रचित्तता से ग्रहण करता है कि वह यथा उसकी स्मृति में ठहर जाए और उसे उन सद्-विचारों को समय अनुरूप प्रयोग करने में किसी किस्म की कठिनाई न हो। इस पुरुषार्थ द्वारा सजनों उस द्वारा किया गया हर कर्म धर्मसंगत होता है और उसका सत्य रूप सबके समक्ष सदा प्रकाशित रहता है। इसलिए सजनों उस विवेकशील इंसान को जो प्रकाश है मन-मंदिर, वही प्रकाश है जग अंदर, भासित नज़र आता है। इस प्रकार वह स्वतः ही सजनता का प्रतीक बन जाता है।

इस महत्ता को ध्यान में रखते हुए सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हमें समभाव अपनाकर, समदृष्टि अनुकूल परस्पर सजनतायुक्त आचार-व्यवहार करने का आवाहन दे रहा है ताकि हम इस हितकर बात को समझें और अविलम्ब जाग्रति में आ व सब अन्य मनगढ़ंत भाव-स्वभाव छोड़, समभाव अपना सत्-वादी बन जाएँ। अब ध्यान से सुनो कि इस बात के संदर्भ में परमेश्वर हमें क्या कह रहे हैं, वह कह रहे हैंः-

उस प्यारे दे मैं संग राहवां, सतवस्तु दा साज पावे ओ जेहड़ा।
सत्-वस्तु दे सतवादी होवन कैसा राज है मेरा।।
सतवादी सचखंड ब्रह्माण्ड हर अन्दर स्थान है जेहड़ा।
हाँ मैं सर्वव्यापी युग युग रोशन नाम है मेरा।।

इस बात को समझते हुए सजनों असत्य को छोड़ सत्य को धार लो यानि सच बोलचाल, सच खान-पीन व सच का ही सौदा करो। इस तरह सच ज़बान, सच हृदय व दोनों नयनों से सच्चाई विशाल झलके। तभी हृदय सचखंड हो पाएगा और आप एक निगाह एक दृष्टि हो, समभाव से सर्वव्याप्त भगवान का दर्शन कर समदृष्टि हो जाओगे और अपने जीवन को अखंड यश-कीर्ति की प्राप्ति का भागी बना पाओगे।

यदि सजनों ऐसा ही चाहते हो तो फिर अविलम्ब अधर्म का मार्ग छोड़ निर्भयता से धर्म मार्ग पर चलना सुनिश्चित करो क्योंकि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा हैः-

धर्म ते चलीं अधर्म न करीं, ख़ुशी विच उमर बिता।
अर्थात कभी भी किसी भी अवस्था व किसी भी परिस्थिति में
धर्म मत हारना रे, धर्म के ऊपर सजनों तन मन धन सब वारना रे।

अतः धर्म के ऊपर अपना सर्वस्व निछावर करने वाला श्रेष्ठ इंसान बनने हेतु सजनों अपने हृदय में उत्साह व उमंग पैदा करो और कलुकाल के स्वभाव छोड़ व सतवस्तु के स्वभाव अपना अर्थात् स्वाभाविक परिवर्तन द्वारा कलुकाल की त्रास से बच सतवस्तु में आ जाओ। इस तरह सत्यनिष्ठ व धर्मज्ञ नाम कहाओ। याद रखो इस संदर्भ में परमेश्वर कहते हैंः-

धर्म दा रस्ता धर्म दा मार्ग है जे ओ महान, पौड़ी-पौड़ी चढ़दे जाओ।
सजनो पावो अपना स्थान, कैसा ओथे है विश्राम।।

सजनों यदि हकीकत में निष्पाप जीवन जीते हुए अपने सच्चे घर परमधाम पहुँच विश्राम पाना चाहते हो तो वर्तमान युग में प्रचलित किसी अन्य मनगढ़ंत अविचारयुक्त विचारधारा को अपनाने के स्थान पर, सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में शब्द ब्रह्म विचारों के रूप में विदित ईश्वरीय हुक्म को सच्चे दिल से प्रवान करो और विचार पर खड़े हो जाओ क्योंकि शास्त्र कहता हैः-

हुक्म ते जेहड़े चल बसे, ओ बाज़ी लवण जीत
ओ हार कदे नहीं खांवदे उन्हां दी जित जित ही जीत

कहने का आशय है कि समभाव-समदृष्टि के सबक़ के अमल में प्रवीन होना, मानवता के सिद्धान्त अनुसार वैसा भावयुक्त व्यवहार दर्शाना है जिसमें सबका कल्याण एकरस निहित रहता है। जानो यह स्वार्थपरता से उबर परम अर्थ के लिए जीवन जी पाने के लिए नितांत

आवश्यक होता है। इसलिए तो जो भी हिम्मतवान, समभाव-समदृष्टि हो, जगत में विचरते हुए भी उसमें समरस स्थित रहने का पुरुषार्थ दिखाता है उस बलवान व बुद्धिमान जीव को परमेश्वर अपने कंठ से लगा लेते हैं और अपने सर्वगुण, ज्ञान व शक्ति बक्ष देते हैं। इस तरह अपने वास्तविक स्वरूप का बोध रखने वाला वह प्रकाशित बुद्धि आत्मज्ञानी, एक परिपूर्ण इंसान की तरह आत्मविश्वास के साथ निर्भयता से इस जगत में विचरते हुए तथा सत्य-धर्म अनुसार सब कुछ करते हुए निष्काम अवस्था को प्राप्त रहता है व अपने मन में असीम शांति व आनन्द का अनुभव करता है।

अंत में सजनों हम तो यही कहेंगे कि समभाव अपने आप में मानवता के समस्त गुणों से भरपूर है। इसलिए समभाव हृदय व्याप्त रहने पर मानव के अन्दर परिपूर्णता का एहसास रहता है व आत्मतुष्टि बनी रहती है। यह आत्मतुष्टि परिचायक होती है उस समभावी के आत्मविश्वास की, जिसका आधार होता है अंतर्निहित संतोष व धैर्य रूपी बल। इसी अलौकिक पोशाक द्वारा ही वह अपने यथार्थ धर्म अनुरूप आत्मीयता के स्वभावों पर सुदृढ़ रह पाता है व इस लौकिक जगत में आत्मविश्वास के साथ, हर कठिन से कठिन काम प्रसन्नतापूर्वक सहजता से कर पाने में सक्षम हो जाता है। इस प्रकार अपने जीवन का हर कर्त्तव्य बखूबी निभा वह सर्व कल्याण का निमित्त कारण बनता है और परोपकारी नाम कहाता है। यह अपने आप में हर शरीरधारी जीव के लिए अपने जीवन का प्रयोजन समयबद्ध सिद्ध कर निष्कलंक अपने सच्चे घर परमधाम पहुँच विश्राम को पाने की शुभ बात होती है।

सरल शब्दों में यदि हम कहें तो उसके लिए इस जगत की मिथ्या कल्पना छोड़, अपना ख़्याल परमेश्वर के संग जोड़ अर्थात् सुरत-शब्द के योग द्वारा, सदा अपनी वास्तविकता में बने रहना सहज हो जाता है। इस तरह वह जब ईश्वर है अपना आप के विचार पर खड़ा हो जाता है तो उसे फिर भूत-भविष्य नहीं सताता यानि वह कालातीत हो जाता है। इस संदर्भ में हम सब यह शास्त्रविदित बात जानते ही हैं कि मनुष्य अपने जीवन के सारे निर्णय भविष्य के सुख के आधार पर लेता है परन्तु भविष्य कोई नहीं जानता, वह केवल कल्पना मात्र है। इसका अर्थ है हम जीवन के सारे निर्णय कल्पनाओं के आधार पर ही करते हैं, अपने वास्तविक धर्म के आधार पर नहीं। परन्तु अगर हम सारे निर्णय धर्म के आधार पर करें तो भविष्य निश्चित रूप से सुखमय होगा क्योंकि सारे सुख का आधार धर्म ही है और यह मनुष्य के हृदय में सदा विद्यमान रहता है। अतः हमारे लिए बनता है कि हम प्रत्येक निर्णय लेने से पूर्व अपने हृदय की ध्वनि को अवश्य सुने क्योंकि हृदय की वाणी ईश्वर की

वाणी होती है। इस वाणी को आत्मसात करने पर ही हमारा व सबका कल्याण हो सकता है। इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों यह कभी मत सोचो कि ज़िन्दगी को बदलने के लिए वक्त लगता है अपितु ध्यान से वक्त की आवाज़ सुनो। क्या पता वक्त पल भर में ही आपकी ज़िन्दगी बदल दे यानि स्वाभाविक परिवर्तन द्वारा आपको कलियुग से सतयुग की ओर ले आए। अतः सजनों समय रहते ही घर सतयुग बनाने हेतुः-

सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, जो है कह रहा
ध्यान से सुनो, वह सब संदेश
कलुकाल है जाने वाला, सतवस्तु है आने वाली
सत्-वादी बन कर सारे उसमें करो प्रवेश
इसलिए
समभाव अपनाओ, समभाव अपनाओ
और समभाव अपना कर सारे ही
समदृष्टि हो जाओ
फिर संतोष भी होगा, धैर्य भी होगा
सत्य धर्म पर स्थिर रह मानव बनोगे विशेष

अंत में सजनों मानवता के सिद्धान्त पर स्थिर बने रहने हेतु, समभाव-समदृष्टि के सबक़ की महानता को समझते हुए, हम हर माता-पिता व समाज के समस्त कर्णधारों से प्रार्थना करते हैं कि वे बाल्यावस्था से ही हर प्राणी को इंसानियत में ढालने के प्रति अपने मुख्य कर्त्तव्य को दृष्टिगत रखते हुए, लालन-पालन के दौरान उसकी अन्दरूनी व बैहरूनी वृत्तियों को रजोगुणी या तमोगुणी प्रधान बनाने के स्थान पर सतोगुणी प्रधान बनाना सुनिश्चित करें ताकि उसका संकल्प सदा स्वच्छ अवस्था को प्राप्त रहे। इस तरह उनके आस-पास कुछ भी सतोगुण के विपरीत घटित होने वाला उनके ख़्याल को प्रभावित कर दूषित न कर सके और वे सदा अपनी जिह्वा को स्वतन्त्र, संकल्प को स्वच्छ व दृष्टि को कंचन रखते हुए, एकरस सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते पर चलते हुए एकता और एक अवस्था में बने रह शांतिपूर्वक जीवन जी अंत असीम शांति को प्राप्त हो सकें।

इसी असीम शांति की प्राप्ति हेतु आओ अब सब मिलकर बोलें:-

समभाव दी होसिवे फ़तह, समभाव दी होसिवे फ़तह, समभाव दी होसिवे फ़तह

इन्हीं शब्दों के साथ सभी सजनों को जय सीता राम जी।

पहला एंकरः- समभाव दी होसवे फ़तह, समभाव दी होसवे फ़तह, समभाव दी होसवे फतह, भई वाह.....।

इस सर्वोच्च लक्ष्य की प्राप्ति हेतु तो सजनों हमें उमंगित हो, अति उत्साह व आत्मविश्वास के साथ एक योद्धा की तरह आगे बढ़ना होगा और निश्चित रूप से अंतर्निहित बुरे भावों का त्याग कर समभाव अपना समदृष्टि हो जाना होगा।

दूसरा एंकरः- मानो अगर ऐसा पुरुषार्थ कर दिखाया तो आप अवश्यमेव सजनता के प्रतीक बन जाओगे और आपके लिए परस्पर सजन भाव अनुरूप व्यवहार करना सहज भी हो जाएगा और आपको ऐसा करना अच्छा भी लगेगा क्योंकि इस प्रयास द्वारा उखड़े दिल पुनः मिलकर एक हो जाएंगे।

पहला एंकरः-जी हाँ, अगर एकता में आ अपना घर सतयुग बनाना चाहते हो तो परस्पर सजनतापूर्ण व्यवहार करना आरम्भ कर दो। इस हेतु अब कुदरत का पैगाम ध्यान से सुनोः-

श्री साजन जी दे मुख दा

शब्दः- सजनों सजन शब्द चलाओ जितो मृत लोक नूं
सजनों जितो मृत लोक नूं ।

सजनों हमारा पैगाम ले लीजिए, एहो पैगाम सजनां नूं सुना दीजिए - क्या
सजन सदो सजन सदावो, सजन सदो सजन सदावो
सजन ही पहरेवा पाओ, सजन करो वर्त-वर्ताओ
आप वर्तो सजनां नूं वर्तना सिखा दीजिए
एहो सजनां कोलो उत्तर सानूं लिया दीजिए

सजनों हमारा पैगाम ले लीजिए, एहो पैगाम सजनां नूं सुना दीजिए - क्या
जिह्वा स्वतन्त्र संकल्प स्वच्छ, जिव्हा स्वतन्त्र संकल्प स्वच्छ
इक निगाह इक दृष्टि दिखाओ, इक निगाह इक दृष्टि दिखाओ
आप देखो ते सजनां नूं दिखा दीजिए
एहो सजनां कोलो उत्तर सानूं लिया दीजिए
सजनों हमारा पैगाम ले लीजिए, एहो पैगाम सजनां नूं सुना दीजिए - क्या
पकड़ो सजनों आप नूं, खालस सोना हो जाओ
अपने प्रकाश नूं पाओ
आप पाओ ते सजनां नूं प्रकाश होने दा तरीका समझा दीजिए
एहो सजनां कोलो उत्तर सानूं लिया दीजिए

सजनों हमारा पैगाम ले लीजिए, एहो पैगाम सजनां नूं सुना दीजिए - क्या
सजनों कदम-कदम ते विचार होवे, विचार नाल सजनों प्यार होवे
दिव्य दृष्टि दिखाओ
आप देखो ते सजनां नूं देखना सिखा दीजिए
एहो सजनां कोलो उत्तर सानूं लिया दीजिए

सजन शब्द चलाओ ते चलदे जाओ
सजनो ऐसा पराक्रम दिखाओ, परउपकारी नाम कहाओ
आप उपकार करो ते सजना नूं उपकार करना सिखा दीजिए
एहो सजनां कोलो उत्तर सानूं लिया दीजिए
सजनों हमारा पैगाम ले लीजिए, एहो पैगाम सजनां नूं सुना दीजिए - क्या

शब्दः- सजनों एहो तरीका है जे मेल खावने दा,
फिर जीवन अपना बना लीजिए।
ज्योति स्वरूप और पारब्रह्म परमेश्वर,
फिर रौशन नाम अपना कीजिए।।

आप उपकार करो

हमारा पैगाम ले लीजिए,

सज्जन
सदा सज्जन सदृशो
सज्जन ही
पहचान पाओ
शिक्षा उत्तम
संस्कार श्रेष्ठ इक
विचार ईक
हमें दिखाओ
पकड़ो सज्जनो
आपनें स्वानम
सोना हो जाओ

सजनों एहो तरीका है जे मेल
शिक्षा उत्तम
संस्कार श्रेष्ठ इक
विचार ईक
हमें दिखाओ
पकड़ो सज्जनो
आपनें स्वानम
सोना हो जाओ
आपने
प्रकाश हुं
राजो
कथन ते विचार
होये
दिल
प्रीत सज्जनो
दिखाओ
सज्जन
सदा सज्जनो
ही पहचान
पाओ
एक साथ
आपनो सज्जनो
बन रहो

फिर रौशन नाम अपना कीजिए।।

फिर रौशन नाम अपना कीजिए।।

दूसरा एंकरः- सजनों जानो कि इस पैगाम द्वारा परमेश्वर हर दुश्चारित्र चिंतायुक्त मानव को, आज तक अपनाए हुए स्वार्थपर दुष्ट भाव-स्वभाव को छोड़, पाप कर्मों से मुक्त होने हेतु समभाव को अपना, सजन पुरुष बनने का आवाहन दे रहे हैं ताकि वह सुकर्म करते हुए, परोपकारी नाम कहला सकें और मृतलोक पर फ़तह पा अपना जीवन सफल बना सकें।

पहला एंकरः- इस संदर्भ में सजनों जानो कि सजन पुरुष ही सबके साथ अच्छा, प्रिय तथा उचित व्यवहार करने वाला भला आदमी कहलाता है। यह अपने आप में सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते पर स्थिर बने रह परम अर्थ हेतु निष्पाप जीवन जीने की बात होती है। जानो ऐसे निष्पाप इंसान का मन सदा शांत व चित्त स्थिर अवस्था में सधा रहता है। इसी कारण वह इस मायावी जगत में चेतनायुक्त होकर विचारसंगत एक सत्-वादी इंसान की तरह यथार्थता से विचरता है। ऐसे सत् और चैतन्य भाव से युक्त इंसान पर फिर जगतीय माया किसी प्रकार से भी अपना प्रभाव डाल उसे अपने प्रकाशमय ज्योति स्वरूप के प्रति अबोध बना अपने जाल में नहीं फँसा सकती।

दूसरा एंकरः- सजनों अब अगर अपने जीवन का मुख्य प्रयोजन निश्चिंतता से सिद्ध करने हेतु आपको समभाव अपना, समदृष्टि हो जाने की महत्ता समझ आ गई है तो समभाव अपनाने के प्रति दृढ़ संकल्पी होने हेतु ध्यान से सुनोः-

समभाव है तो, हम स्थिर बुद्धि हैं
स्थिर बुद्धि हैं तो, एकता है
एकता है तो, शांति है
शांति है तो, हम हैं
हम हैं तो ब्रह्म है
ब्रह्म है तो, सम है
सम है तो, समदृष्टि है
समदृष्टि है तो, समचित्त हैं
समचित्त हैं तो समचर हैं
समचर हैं तो बुद्धिमान हैं
बुद्धिमान हैं तो यश कीर्ति महान है
मानो ऐसा सुखद होने पर ही
हम वास्तविक रूप से इंसान हैं
और इस लोक में तो क्या
परलोक में भी हमारी शान है
तो आओ अब सब मिलकर बोलें
ऐसा ही मानव बनने में ही कल्याण है
क्योंकि समभाव समदृष्टि अपनाने हेतु
हमारा नहीं, कुदरत का फ़रमान है

अतः सजनों याद रखो जो भी कलियुगी इंसान कुदरत के फ़रमान का सम्मान करते हुए समभाव-समदृष्टि का सबक़ विधिवत् धारण कर परस्पर समरसता अनुरूप व्यवहार पर स्थिर बने रहने हेतु शारीरिक स्वभावों को छोड़ने से नहीं सकुचाएगा अर्थात् कुमति छोड़ सुमति में आ जाएगा व ऐसा पुरुषार्थ दिखा सत्-वादी बन एकता, एक अवस्था में आ जाएगा, केवल वही हाँ केवल वही ही सतवस्तु में आ भाग्यशाली कहलाएगा। इसलिए आज के शुभ दिवस पर अपना भाग्य जगाने के प्रति दृढ़ संकल्प हो जाओ और ए विध् अपना जीवन सफल बनाओ।

समभाव है तो
र बुद्धि हैं
भाव

हम हैं तो
ब्रह्म है

परलोक
भी हमारी शान है

अपनाने हेतु

पहला एंकरः- समभाव समदृष्टि के सबक़ के बारे में इतना सब जानने समझने के पश्चात् सजनों अगर अब आपके मन में उसको धारने के प्रति रुचि पैदा हुई है तो आपको फुरने से युक्त नकारात्मक सोचने, बोलने व वैसा ही करने के स्वभाव को छोड़ना होगा और आत्मज्ञान प्राप्त कर अफुरता से अपने ख़्याल को सदा सकारात्मक स्थिति में साधे रखना होगा।

दूसरा एंकरः- ऐसा सुनिश्चित करने का पुरुषार्थ दिखाना अपने व सबके लिए ही हितकारी मानो क्योंकि बुरे ख़्यालों व भाव-स्वभावों के प्रभाव से इंसान शारीरिक व मानसिक दोनों तरह से रोगी हो जाता है और आत्मविश्वास के साथ अपना आत्मिक बल उचित ढंग से प्रयोग करने में असमर्थ रहता है। जानो ऐसे रोगियों की विवेकशक्ति क्षीण हो जाती है। परिणामतः उनकी वृत्ति, स्मृति, बुद्धि व भाव स्वभाव रूपी बाणा सबके सब मलिन हो जाते हैं और उनके हृदय से सत्य लुप्त हो जाता है। इसलिए तो उनके लिए इंसानियत में बने रहना असंभव हो जाता है। इसी कारण सजनों ऐसा इंसान सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते से भटक परमार्थ के स्थान पर स्वार्थपरता का सिद्धान्त अपना, उसी अनुरूप झूठ, चतुराई व छल-कपट का सहारा ले, दुराचारिता पूर्ण आचार-व्यवहार करते हुए सबसे अलग-थलग पड़ जाता है और मनोकामनाओं की पूर्ति-अपूर्ति के चक्रव्यूह में फँसने पर उसकी पकड़ से सम, संतोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म का पुरुषार्थ छूट जाता है।

पहला एंकरः- इस तरह उस अज्ञानमय वातावरण में अधर्म के रास्ते पर अग्रसर हो वह सदा पाप कर्म करता है और जन्म मरण की त्रास भुगतता हुआ आवागमन के चक्रव्यूह में फँस जाता है। इस हानि से बचने के लिए सजनों समभाव-समदृष्टि को अपना, अमल में लाना उचित समझो। अतः

यह तभी होगा अगर जिह्वा कर जावे उन्हां दी
चुप, फिर ख़्याल न राहवे सोचां विच
कुसंगी संकल्प का झुरना हटाओ अर्थात्
रोना-झुखना बंद करो।
शारीरिक-मानसिक स्वस्थता हेतु राजसिक-
तामसिक आहार व विचारों का परित्याग करो।

छोड़ो छोड़ो दानवता,
सब अपनाओ मानवता।
HUMANITY OLYMPIAD
4th Inte
Humanity
iad
World Equ
y Day
Making leaders of tomorrow
man beings today.
Promoters:
लोकसत्य
#humanityolympiad

इस संदर्भ में अगर हकीकत में समभाव अपना कर समदृष्टि होना चाहते हो तो राजसिकता व तामसिकता के प्रतीक इन बुरे भाव-स्वभावों को त्यागने का पराक्रम दिखाओः-

काम, क्रोध को छोड़ो।
लोभ, मोह का त्याग करो।

अहंकार/अभिमान यानि हौं-मैं को त्याग कर तीनो तापों पर फ़तह पाओ।
असत्य को छोड़ो और हर प्रकार के फुरने से मुक्त हो निश्चिंत हो जाओ।

प्रतिकूल तरीके से बातचीत करने का तरीका त्याग कर, इंसानियत अनुरूप वर्ताव करने का कौशल सीखो।

जिह्वा से निंदा-चुगली व गाली-गलौच युक्त बुरी, झूठी, तीखी व मंदी बातें करनी छोड़ दो क्योंकि कहा गया हैः-

जिह्वा गल बात उल्टे, फिर ख़्याल नूं पलटा खवाओ
फिर जिह्वा पलटा खा गई, फिर ख़्याल नूं पलटा खवाओ

इस कथन के अनुसार ख़्याल को झगड़े-बखेड़ों व नकारात्मक बातों के कनरस से छुड़ाओ। यह तभी होगा अगर

जिह्वा कर जावे उन्हां दी चुप, फिर ख़्याल न राहवे सोचां विच

कुसंगी संकल्प का झुरना हटाओ अर्थात् रोना-झुखना बंद करो।

शारीरिक-मानसिक स्वस्थता हेतु राजसिक-तामसिक आहार व विचारों का परित्याग करो। जानो माँसाहार, मद्यपान आदि नशीले पदार्थों का सेवन इसी के अंतर्गत आता है।

अविचारयुक्त भक्ति भाव जैसे शरीरों का ध्यान लगाना, मनौतियाँ माँगना, मूर्ति-पूजा, कर्मकांड आदि करना छोड़ दो।

घर-परिवार या संसार वालों की किसी भी ऐसी वैसी बात को सुनकर हृदय में ठहरने की जगह न दो जिससे अन्दर कल्पना पैदा हो। याद रखो यदि ऐसा न किया तो हृदय में

ठहरी हुई वह अनुचित बात एक दिन दोस्तों व सहेलियों से वार्तालाप के दौरान चुगली बन के बाहर निकलेगी जो कि समभाव के चलन के सर्वथा विपरीत है। इस बात को ध्यान में रखते हुए किसी की कोई निरर्थक बात न सुनो। अगर मजबूरीवश सुननी भी पड़े तो एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल दो।

पिछली बातों को भूल जाओ यानि बीती हुई बात याद नहीं आनी चाहिए क्योंकि आदेश है किः-

पिछली जो गुज़री जो बीती विहाणी, ख़्याल विच न बात ओ लियाओ

पिछली बातों की तरह पिछली बुरी आदतों को भी भूल जाओ क्योंकि आदतों के वशीभूत होकर ही हम बार-बार कसूर करते हैं। जैसा कि कहा भी गया हैः-

सानुं आदत करे मजबूर असां फिर फिर करूं कसूर।

ऐसा न हो इसलिए कहा है किः-

सच्चाई धर्म लवो तुसां धार,
फिर किस तरह करो विकार, आदतों हो गए लाचार।।

किसी के पंजे या घेरे में न आओ अर्थात् पराधीन नहीं होवो अर्थात् समभाव अपना निर्मल व स्वतन्त्र बुद्धि बने रहो।

दूसरा एंकरः- सजनों हम मानते हैं कि जो नकारात्मक त्याज्य भाव-स्वभाव अभी आपको बताए गए हैं आप सजनों ने उनके विषय में जानकारी प्राप्त करने के दौरान ही अपना आत्मनिरीक्षण कर उनको छोड़ने का निश्चय ले लिया होगा। क्या ऐसा ही है जी.....?

पब्लिकः- हाँ जी।

पहला एंकरः- हाँ जी, तो मानो यह अपने आप में सात्विक आहार-आचार-विचार व व्यवहार अपनाने व बुरे से अच्छा इंसान बनने के प्रति दृढ़ संकल्प होने की बात है।

दूसरा एंकरः- इस संदर्भ में सजनों अगर हकीकत में काम, क्रोध जैसे भारी दुश्मनों को मार मुका समदृष्टि हो भवसागर से पार उतरना चाहते हो तो इस हेतु सजन श्री शहनशाह

हनुमान जी के आगे प्रार्थना कर उनका संग प्राप्त करना होगा। उनका संग प्राप्त होने पर उनके वचनों पर कुर्बान होने का मादा अपने अन्दर पैदा करना होगा ताकि वह दयालु तीनों तापों द्वारा सताई हुई सुरत की पुकार सुनकर उनसे छुटकारा पाने की युक्ति बक्ष दें व समदृष्टि का रास्ता बता दें।

पहला एंकरः- सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार सजनों, जीव के इस अवस्था को प्राप्त होने पर इंसान बाह्य जगत से मुख घुमा अंतर्मुखी हो जाता है और सम, संतोष को धारण कर पाता है। यह अपने आप में विनाशकारी अहंकार से बच मौत के भय से आज़ाद होने की बात होती है।

दूसरा एंकरः- आप भी मौत के भय से आज़ाद होने हेतु सजनों बनावटी भाव-स्वभाव छोड़ इंसानियत अनुरूप वास्तविक भाव-स्वभाव अपनाने का निश्चय लो और अपने जीवन में समयबद्ध ऐसा अभूतपूर्व परिवर्तन लाने के लिए समय के साथ निरंतर कदम मिलाकर मजबूती से आगे बढ़ते चलो। याद रखो कुदरत के नियम अनुसार अब कलियुग जा रहा है और सतयुग आ रहा है। सतयुगी आचार-संहिता को अपनाने का अनथक पुरुषार्थ दिखा कर ही आप समय की गति के साथ आगे बढ़ते हुए सतयुग में प्रवेश पाने के सुपात्र बन अपना भाग्य जगा सकते हो। क्या सब ऐसा करने को तैयार हो जी?

पब्लिकः- हाँ जी।

दूसरा एंकरः- तो आओ फिर अपने जीवन का प्रयोजन सिद्ध कर श्रेष्ठ मानव कहलाने हेतु अब जानते हैं कि अपनी वृत्ति, स्मृति, बुद्धि व भाव स्वभावों के ताने बाणे को निर्मल बनाने के लिए हमें क्या-क्या धारण करना होगा :-

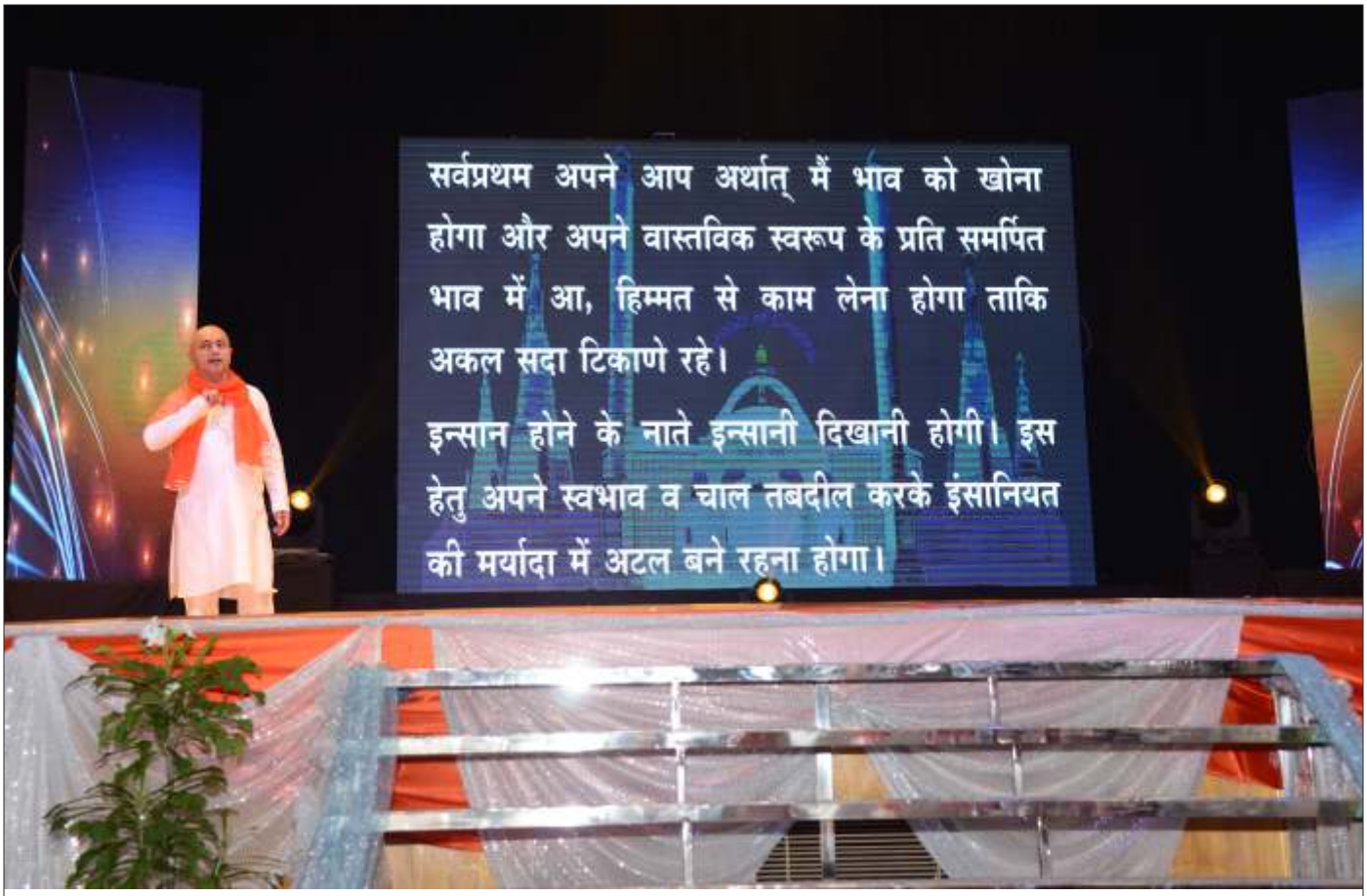

सर्वप्रथम अपने आप अर्थात् 'मैं' भाव को खोना होगा और अपने वास्तविक स्वरूप के प्रति समर्पित भाव में आ, हिम्मत से काम लेना होगा ताकि अकल सदा टिकाणे रहे।

इन्सान होने के नाते इन्सानी दिखानी होगी। इस हेतु अपने स्वभाव व चाल तबदील करके इंसानियत की मर्यादा में अटल बने रहना होगा।

आत्मिक ज्ञान की प्राप्ति के प्रति हृदय में भरपूर उमंग पैदा कर सत्-शास्त्र का विचार करते हुए आत्मज्ञानी बनना सुनिश्चित करना होगा।

पाँच ज्ञानेन्द्रियों को दमन करके व मन शैतान का मुख जगत की तरफ से मोड़कर, अपने ख़्याल को परमेश्वर संग जोड़ना होगा। इस हेतु वैराग की डोर द्वारा सदा अपनी सुरत को अफुरता से प्रभु चरणों में स्थित रखना होगा।

नाम जाप व ध्यान द्वारा भजन बन्दगी विशाल पकड़ते हुए, संतोष-धैर्य का सिंगार पहनना होगा।

सत्य को धारण कर स्थिर होना होगा यानि सच्चाई से अपनी ज़बान, हृदय व नैनों को भरपूर कर इस शरीर रूपी मकान को सचखंड बनाना होगा क्योंकि शास्त्र कह रहा हैः-

सच्ची ज़बान सच्चा करो हृदय,
ओ सच्चाई नाल भर लौ सजनों दोनों नैन विशाल

सच्चाई को पकड़ कर धर्म के निष्काम रास्ते पर निर्भयता से सीधे बढ़ते जाना होगा। इस हेतु जो प्रकाश मन-मन्दिर में देखा है वही जग अन्दर देखते हुए मुकम्मल तौर पर एक दृष्टि दिखानी होगी। ऐसा करने से दिव्य दृष्टि का सबक़ मिल जाएगा। जैसे कि कहा भी गया हैः-

भक्ति सच धर्म दी कर, फिर इन्सान नूं मौत दा न रिहा डर
शक्ति दा हथियार हाथों में फड़, बेखौफ़ा बेखतरा जगत में विचर

विचार शब्द के महामंत्र को हर समय अपने सामने रखना होगा और हर कदम पर अपनी तुलना करनी होगी कि कोई ऐसा कदम न उठे या कोई ऐसा ख़्याल घर न कर जावे जिस से समभाव-समदृष्टि की पढ़ाई का उल्लंघन हो। इस प्रकार विचार शब्द द्वारा सजनों कदम-कदम पर अपने आप को नित्तोनित पकड़ते हुए यानि आत्मनिरीक्षण द्वारा जाँचना-तुलना करते हुए ताकत में आना होगा और इस बदन में से खोट निकाल कर कंचन यानि खालस सोना होते जाना होगा। इस विषय में जानोः-

विचार शब्द जैं पकड़ लिया, ओहदा हृदय खिड़या बहार ओ जी।

जिह्वा से सबको सजन बुलाते हुए व जी-जी का वर्ताव करते हुए, अपनी जिह्वा को स्वतन्त्र व संकल्प को सजन व संगी बनाना होगा क्योंकि शास्त्र कह रहा हैः-

जिह्वा सजन ख़्याल सजन, सजन नज़रों में पहचान।
हम हैं सजन तुम हो सजन, सजनों सजन सजन ही मान।।
सजनों सजन बोलचाल ही सीखो, सजनों सजन करो प्रवान।
कंचन हूँ मैं आप, कंचन कुल जहान कंचन जड़ चेतन प्रकाशे, कंचन कुल सगली मान।।

इस सत्य को स्वीकारना होगा कि सर्वव्यापक एक ही भगवान/चमत्कार है। ऐसा करने से सारा ब्रह्माण्ड एक हो जाएगा और दूसरा किसी का कोई नामोनिशान ही नहीं रहेगा। अतः

एक ही मानो एक ही जानो सजनों एक ही करो प्रवान।
इक इक ही सारा जग दिस्से इक है ओ सर्व महान।।

दुःख-सुख, जन्म-मरण, रोग-सोग, खुशी-गमी, गरीबी-अमीरी, मान-अपमान, सब परिस्थितियों को समकर जानना होगा यानि दुख में सुख मनाना होगा।

सबको सजन मानते व जानते हुए एक सजन वृत्ति पकड़नी होगी। इस तरह सजनता अनुकूल बोलचाल व स्वभाव अपना कर सबके साथ एक ही तरह का समाचरण यानि वर्ताव करना होगा और सजन बुद्धि हो जाना होगा।

जनचर, बनचर, जगत-जहान, सबको समभाव से देखना होगा अर्थात् जात-पात, अमीरी-गरीबी, वड-छोट, अपना-पराया, भला-बुरा, खोटा-खरा, वैरी, दुश्मन, शत्रु सबके प्रति एक सजन दृष्टि रखते हुए एक निगाह एक दृष्टि हो जाना होगा क्योंकि

जिस ने निगाह कर लई एक, उस सजन दी बुद्धि हो गई विवेक।

चूंकि समभाव एक दृष्टि है, एक दर्शन है। इसलिए सबको एक नजर से देखते हुए समदृष्टि रखनी होगी यानि सर्व राम रूप समझते हुए व सबके साथ एक जैसा वर्ताव करते हुए मेल मिलाप से प्रसन्नतापूर्वक रहना होगा। इस तरहः-

सजनों एकता पकड़ो एकता दिखाओ, सजनों एकता पकड़ो एकता दिखाओ।
सजनों एकता दा पवे प्रभाव ओये, सजनों एकता पकड़ो एकता दिखाओ।।

आशय यह है कि अन्दर की वृत्ति दर्शन में तथा बाहर की एक रस राम रूप में हो। इससे अन्दर की वृत्ति भी दमन हो जाएगी और बाहर की भी जीती जाएगी। यह समदृष्टि का छोटा सा तरीका है।

इस सबक़ को व्यवहार में लाने हेतु सबसे पहले इसका वर्ताव अपने घर के कार्य व्यवहार में

शुरु करना होगा। इस हेतु घर में नौकर आदि के साथ भी वही वर्ताव हो जो कि दूसरे रिश्तेदारों और बच्चों के साथ होवे।

बैहरूनी वृत्ति को छोड़कर अन्दरूनी वृत्ति को पकड़ना होगा। इस हेतु वृत्ति मौन की हो यानि समवृत्ति हो जाओ।

किसी शरीरधारी या तस्वीर/मूर्ति का नहीं अपितु महाराज जी की इलाही सूरत का ध्यान लगा उसी में मग्न रहना होगा। इस हेतु ख़्याल ध्यान वल व ध्यान प्रकाश वल जोड़ अफुर हो जाना होगा।

खान-पीन, उठन-बैठन, हर तरह से सम्भल के रहना होगा यानि सात्विक आहार-विचार के सेवन को ही महत्ता देते हुए, युवावस्था के असूलों को पकड़ना होगा व उन पर चलते हुए उन्हीं पर मजबूत बने रहना होगा।

सबके प्रति अपने फ़र्ज अदा का हँस कर निर्वहन करना होगा।

परिश्रम ऐसा दिखाना होगा कि मन में किसी तरह का कोई संकल्प व फुरना न उठे। इस हेतु अपनी निगाहबानी करनी होगी।

समभाव का सबक़ आप पकाना होगा व सजनों को पकवाना होगा। कहने का आशय यह है कि समभाव पकड़ते हुए व सजन शब्द का वर्त-वर्ताव करते हुए सजन आप होना होगा और सजन सबको बनाना होगा यानि दूसरों को भी अपने साथ मिलाने का परोपकार कमाना होगा। इस हेतु शास्त्र कह रहा है:-

समभाव समदृष्टि दे प्रतिकूल न चलियो, समभाव नज़रों में कर सजन वृत्ति फड़ियो
सजन भाव नज़रों में कर के सजनों, सजन भाव प्रकृति में लियाईयो

ईश्वरीय हुक्म यानि वचनों की पालना प्रसन्नता से करनी होगी। याद रखो ईश्वर का हुक्म है:-

समभाव समदृष्टि दा सजनों, दिल में अमल लियाओ
दिल में अमल लिया के सजनों, दिल में अमल कमाओ, दिल नाल दिल मिलाओ।

पहला एंकरः- सजन जी समभाव-समदृष्टि अनुरूप चलन अपनाने की युक्ति बता कर आपने तो हमारा काम ही आसान कर दिया। अब लग रहा है कि हकीकत में:-

समभाव समदृष्टि दा शब्द निवे कोई औखा,
पकड़ो सजनों आप नूं होना जे गर सौखा।

दूसरा एंकरः-यह तो आप ठीक कह रहे हो। इस संदर्भ में सजनों यदि हम सभी श्रद्धेय युग-पुरुषों के जीवन चरित्र को ध्यान से समझें तो हमें ज्ञात होगा कि उन्हें भी दुःख-सुख जीवन की इन दोनों अवस्थाओं में शोक-हर्ष से बचे रहने हेतु समभाव-समदृष्टि की युक्ति को अमल में लाना पड़ा। इतिहास गवाह है कि तभी वे उन कठिन व विषम परिस्थितियों में भी अपने मन-मस्तिष्क को सम अवस्था में साधे रखने का पराक्रम दिखाने के साथ-साथ सजन भाव पर भी सुदृढ़ बने रह पाए और धर्म की रक्षार्थ अपना तन-मन-धन वारने से भी नहीं सकुचाए। इसलिए तो इतना समय व्यतीत होने के उपरांत आज भी उन्हें परमात्मा का रूप मान वैसा ही सम्मान प्रदान किया जाता है और उनका यशोगान गाया जाता है। सजनों हम भी समभाव अपनाकर उन जैसे चरित्रवान बन जाएं इस हेतु आओ अब ध्यान से सुनें:-

आओ समभाव समदृष्टि की युक्ति प्रवान करें।
जैसे हमारे युग पुरुष थे वैसे ही इन्सान बनें।।

आओ हम तुम, तुम हम मिलकर, उन जैसी ही चाल चलें।
जैसा उन्होंने कर दिखलाया, वैसा ही कमाल करें।।
समभाव को राम ने माना,
जिनके हैं हम सब अनुयाई।
समभाव को कृष्ण ने माना,
जिन संग सबने लगन लगाई।।

समभाव ग्रन्थों में विदित है,
जिनकी हम करते हैं पढ़ाई।

फिर भी क्यों समभाव की कीमत हमने नहीं है पाई,
कैसे हैं सौदाई यह बात समझ नहीं आई।।

समभाव समदृष्टि की युक्ति अपनाकर,
ग्रन्थों की वाणी का सत्कार करो।
उनमें वर्णित जीवन चरित्र अनुरूप ढलकर,
अपने पर उपकार करो।।

इसलिए कहते हैं सबसे, सतयुग दर्शन पाने हेतु,
सब ही अपनी वसुन्धरा पर आओ जी।
समभाव समदृष्टि की युक्ति क्या है,
खुद समझ सबके सुख के हेतु
औरों को भी समझाओ जी।
फिर समभाव समदृष्टि अपना
सभी सुखी हो जाओ जी, सभी सुखी हो जाओ जी,

इस संदर्भ में यह याद रखो -

ईश्वर ही सम है, सम ही ईश्वर है, सम ही है उसकी ब्रह्म सत्ता।
सम ही सर्वात्मा विच परमात्मा है, फिर सम ही अजपा जाप है
और सम ही अपना आप बिन सूरजों प्रकाश है।

उन्होंने कर दिखलाया, वैसा ही कमाल करें।।

समभाव को राम ने माना,

समभाव को कृष्ण ने माना,

फिर भी क्यों
की कीमत हमने नहीं है पाई,

सब ही अपनी
पर
जी।

पहला एंकरः- सजनों जैसा अभी हमने सुना उस अनुसार यदि हम भी चाहते हैं कि समभाव-समदृष्टि अपना कर हम भी परमात्मा सम हो परमधाम पहुँच विश्राम को पाएं तो इस हेतु हमारे लिए बनता है कि हम महाबीर रघुनाथ जी संग निष्काम भाव से ऐसी लगन लगाएँ कि हमें उनकी कृपा से स्वतः ही सम, संतोष व सत्-शास्त्र के विचार प्राप्त होने आरम्भ हो जाएं। फिर उनकी और कृपा प्राप्त करने हेतु शास्त्र को विचार कर व सम, संतोष को धार कर उन परमानंद प्रदान करने वाले के समीप रहते हुए हम धैर्य का श्रृंगार पहन निर्भयता से जगत में परोपकार कमाएं।

दूसरा एंकरः सजनों ऐसा करते समय किंचित् मात्र भी घबराओ नहीं क्योंकि वह दयालु तो हर दुखिया जीव की पुकार सुनते हैं और उसके शरीर रूपी दरख़्त के भाग जगा उसे सुकर्मों में प्रवृत्त होने की युक्ति प्रदान करते हैं। अतः आप भी उनकी युक्ति प्रवान कर आत्मिक ज्ञान/विद्या प्राप्त करो।

पहला एंकरः- इस संदर्भ में याद रखो कि जहाँ सरस्वती अर्थात् विद्या और वाणी कंचन होती है, उसी के हृदय में सत्य प्रकाशित रहता है और उसी का हृदय सचखंड कहलाता है। ऐसे विशेष सजन के लिए नाम ध्यान में स्थिर रह व भक्ति शक्ति को धारण कर प्रेम और मस्ती अर्थात् अफुरता से जीवन जीने में किसी प्रकार की कोई कठिनाई उत्पन्न नहीं होती क्योंकि उस वैरागी की सुरत की डोर सदा परमेश्वर के चरणों से जुड़ी रहती है और इस प्रकार ऐसी भाग्यशाली सुरत उनके रंग में पूरी तरह से रंग जाती है तो जगत उसके इलाही स्वरूप को देख कर दंग रह जाता है।

दूसरा एंकरः- इस तथ्य से उत्साहित होकर सजनों हमें भी चाहिए कि हम भी समभाव-समदृष्टि को धारने हेतु अपने हृदय में भी ऐसी ही उमंग पैदा करें और महाबीर जी के वचनों पर चलते हुए सम, संतोष, धैर्य व विचार को धारण कर अपनी अन्दरूनी व बैहरूनी वृत्तियों अर्थात् स्वभावों को समभाव-समदृष्टि अनुरूप श्रृंगारें। ध्यान दो ऐसा

महान तप दिखाकर ही सजनों हम समभाव हो सकते हैं और समदृष्टि का सबक़ प्राप्त कर उसी अनुकूल जगत में विचरते हुए परमेश्वर से मेल खा सकते हैं।

पहला एंकर:- निःसंदेह सजनों इसके लिए आवश्यक है कि हम यह याद रखते हुए कि 'ब्रह्म है सम, संतोष, धैर्य दा सिंगार, ब्रह्म ही है शब्द विचार', अपनी पूरी तन्मयता से सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ पढ़ते हुए व उसमें वर्णित युक्ति को अपना कर सम, संतोष व धैर्य का श्रृंगार पहन लें। सजनों याद रखो जो भी इंसान ऐसा पराक्रम दिखा सम, संतोष, धैर्य, धर्म और सच्चाई विशाल पकड़ लेगा, उसी पर ही परमेश्वर प्रसन्न होंगे और अपनी सारी मलकीयत बख़्श देंगे।

दूसरा एंकर:- इस उपलब्धि के दृष्टिगत सजनों मानो कि सम, संतोष, धैर्य दा सिंगार ही हमारा साथी है और महाबीर जी का संग प्राप्त होने पर इन्हें पकड़ना सुगम हो जाता है। जानो सजनों यही मोक्ष प्राप्ति का हेतु है।

पहला एंकर:- अतः हे इन्सानों ! इन सद्गुणों को धारने का यत्न दिखाओ और ए विध् न फिर मर ते न मुड़ जम।

दूसरा एंकर:-इसलिए तो सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ बार-बार कह रहा है कि इस दुनियां में रहकर सच्चाई पकड़ो, यश लो, अपयश न लो। इस हेतु समदृष्टि रखो व सर्व राम रूप समझो और जानो कि यश की जीत, अपयश की हार होती है।

पहला एंकर:- अतः खान पीन, उठत-बैठत, की तरफ से संभल जाओ और सम, संतोष और भजन-बन्दगी पकड़ वैराग्य अवस्था में स्थित रह अपनी सुरत को सदा परमेश्वर में लीन रखने में ही अपना कल्याण समझो। अंत में हम तो यही कहेंगे कि समभाव-समदृष्टि अपनाओ और मानवता में आकर, बिन औखियाईयों बिन खेचलों भवसागर पार हो जाओ और अपने घर पहुँच विश्राम को पाओ।

दूसरा एंकर:- कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए अब मैं प्रार्थना करती हूँ श्री सजन जी से कि वे इस मौके पर उपस्थित श्री विवेक अत्रे, (Author, TED-X Speaker and Ex-IAS Officer) जी को सम्मानित करें।

पहला एंकर:- धन्यवाद सजन जी। अब मैं प्रार्थना करूँगी कि चतुर्थ अंतर्राष्ट्रीय मानवता ओलम्पियाड के सदस्यों से कि वे मंच पर आएँ और इस विषय पर अपनी संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत करें और अपनी सफलता का राज़ बताएँ।

रिपोर्ट एवं सतयुग दर्शन ट्रस्ट द्वारा आयोजित
द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय समभाव ओलम्पियाड - 2018 के परिणाम

अनुबंध-1

(Refer to Annexure-1 on Page 75)

सारे बच्चेः-हमारी सफलता का राज़ है परमेश्वर द्वारा प्रदत्त समभाव-समदृष्टि की अनमोल युक्ति क्योंकि हमें अब पता चल गया हैः-

जो समभाव अपना मानवता में आए, वही.....है इन्सान
बाकी सब तो, ...हैं शैतान
आओ अब हम निश्चय लें कि हमें इन्सान बनना है या शैतान ?
इन्सान बनना है।
इन्सान बनना है तो इन्सानी दिखाओ
और इन्सानी दिखाने हेतु
समभाव-समदृष्टि का सबक़ अपनाओ
और उन्हीं उसूलों पर बने रह
समभावी होने का पुरुषार्थ दिखाओ
इस प्रकार खुद समभाव अपना कर
व सबको इसे अपनाने के प्रति जाग्रति में लाकर
परोपकारी नाम कहाओ
और इस जगत में पुनः मानवता का झंडा बुलंद कर दो
इस हेतु सब मिलकर बोलो
समभाव दी होसवे फतह, समभाव दी होसवे फतह, समभाव दी होसवे फतह

पहला एंकरः- भई वाह, आपकी अभूतपूर्व सफलता ने तो हम सबको हर्षित कर दिया। इसी संदर्भ में अब हम प्रार्थना करेंगे श्री सजन जी से कि वे अपने आशीर्वचनों द्वारा इन बच्चों का मार्गदर्शन करते हुए उन्हें शुभाशीष देंः-

सजन जी

अभी तक सजनों हमने जाना कि समभाव-समदृष्टि का सबक़ अपने आप में वह संजीवनी है जिसका सेवन करने से मूर्च्छित अवस्था यानि जड़ता को प्राप्त अचेतन प्राणी भी, मायावी जगत के विषयाकर्षण से मुक्त हो, पुनः सचेतन हो जाता है और ए विध् इन्द्रियनिग्रही बन, स्वतन्त्रता से अपनी विवेकशक्ति का प्रयोग करते हुए, अपने वास्तविक स्वरूप का बोध कर लेता है व जीव, जगत तथा ब्रह्म के खेल की रमज़ को जान जाता है।

इस तरह समभाव-समदृष्टि अनुसार जीवन जीने की कला अपने आप में धर्मसंगत जीवन जीने की व जन्म की बाज़ी जीत लेने की बात है। इसलिए तो इस सबक़ को अमल में लाने

में प्रवीण सजन को जीवन व्यवहार का सही ढंग सीखने के लिए किसी अन्य शरीरधारी गुरु को धारण करने की आवश्यकता नहीं रहती अपितु वह स्वतन्त्र बुद्धि, आत्मज्ञानी, आत्मविश्वासी तो अपने आत्मबल के प्रयोग द्वारा श्रेष्ठ मानव की तरह इस जगत में निर्भयता से विचारसंगत विचरता है।

इस संदर्भ में सजनों विडम्बना की बात तो यह है कि मानव जीवन में समभाव-समदृष्टि की इस अतुलनीय महत्ता से परिचित होने के बावजूद भी आज संसार के अधिकतर इंसान, निज मानव धर्म को भूल गए हैं और आडम्बरी कर्मकांड युक्त, भ्रांति फैलाने वाले मनगढ़ंत धर्मों में उलझ, समभाव के स्थान पर, द्वि-द्वेष युक्त आचार-विचार व व्यवहार अपना बैठे हैं। यही कारण है कि वे सत्यनिष्ठ व धर्मपरायण बने रहने में अपने आप को असक्षम पा रहे हैं और परस्पर तेरी-मेरी, वैर-विरोध, झूठ-चतुराई, चोरी-ठगी व छल-कपट करते हुए, आपस में लड़-झगड़ रहे हैं और अंत शांति पाने के लिए तीनों तापों से ग्रस्त हो मन्दिर, मस्जिद, समाज, गुरुद्वारों व तीर्थ स्थानों में भटक रहे हैं। उनकी इस परिस्थिति के दृष्टिगत ही सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया है:-

देखो कलुकाल दी एहो है निशानी, देखो कलुकाल दी एहो है निशानी।
कलुकाल विच अन्ने बहुतेरे, कोई विरले हैन सुजाखे।।
अन्दर दीवा जगदा होवे, अन्नियां नूं कुझ न जापे।
कलुकाल बाहर मन्दिर जावन बहुतेरे, कोई विरला अन्दर देखे।।
वस्तु होवे घर विच प्यारे, जीव राहवे विच भुलेखे।

कहने का आशय यह है कि आत्मीयता का स्थान भौतिकता ने ले लिया है और भौतिक पदार्थों/सुख संसाधनों को प्राप्त करने की होड़ में परिस्थितियों व पालना के अनुरूप कईयों के अन्दर रजोगुण तो कईयों के अन्दर तमोगुण प्रधान हो गया है। इस भयावह स्थिति के प्रभाववश, आज का इंसान भ्रमित व भ्रष्ट बुद्धि हो अज्ञानियों व पागलों जैसा आचार-व्यवहार कर रहा है और शनैः-शनैः अपनी बुद्धि का समूलतः विनाश करने पर तुला हुआ है। इस प्रकार हर कोई अपने-अपने हिसाब से समभाव-समदृष्टि के स्थान पर मनगढ़ंत आचार-विचार संहिता अपनाने पर विवश है और इसी कारण अपना व कुल का सर्वनाश कर रहा है। यहाँ तक कि इस करनी द्वारा मानव की हृदयगत सहजात स्वाभाविक प्रसन्नता भी लुप्त हो गई है और वह मानसिक तनाव का शिकार हो नाना प्रकार के रोगों से ग्रस्त हो गया है।

वर्तमान परिस्थितियों के दृष्टिगत ही सजनों सारी मानव जाति खंड-खंड हो गई है और उसके लिए अब किसी विध् भी एकता, एक अवस्था में स्थिर बने रहना असंभव हो गया है। हैरानी की बात तो यह है कि कुल समाज की ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण अवस्था को देखने-समझने के बावजूद आज कोई भी ज्ञानी-विज्ञानी चाहे वह राजा हो या महाराजा, ऋषि हो या मुनि, शासक हो या प्रशासक, वैद्य हो या डॉक्टर, गुरु हो या महागुरु, कुल संसार को नैतिकता की इस पतनोन्मुख दशा से उबारने में स्वयं को असमर्थ पा रहे हैं। ऐसे में अगर इनमें से किसी के अन्दर ऐसा सामर्थ्य दिखाने की क्षमता है भी, तो वह राजभोग के मोह में फँसे होने के कारण, ऐश्वर्ययुक्त जीवन जीने में ही अपनी आन-बान व शान समझता है और इसी कारण पर-कल्याण के निमित्त किसी प्रकार का भी कोई त्याग दिखाने में हिचकिचाता है। इसी प्रकार जिन इंसानों के अन्दर तमोगुण प्रधान है उनके निकृष्ट कर्मों से प्राप्त होने वाले बुरे परिणामों का चाहे वर्णन करना कठिन है, पर इतिहास तो गवाह है।

कहने का आशय यह है कि अहंता युक्त मनमत आज सब पर हावी है इसलिए आज सब अपना-अपना राज चला बैठे हैं और समाज को समभाव-समदृष्टि के पाठ के स्थान पर, तेरी-मेरी, वड-छोट, अमीरी-गरीबी आदि जैसे स्वार्थपर दुर्भावों का पाठ पढ़ा कर, मानवता के सिद्धान्त की अवहेलना कर रहे हैं। ऐसे में आज किसी विरले के मन में ही मानवता के सिद्धान्त के प्रति जाग्रति व उस पर स्थिर बने रहने की सक्षमता यानि बुद्धि कौशल नज़र आता है।

सजनों यह है कलुकाल की कहानी। इस तथ्य को समझो और अब और नादानी मत करो क्योंकि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा हैः-

एह पहरेवे बड़े निकम्मे, मुड़ चौरासी दे विच घुम्मे।

हम में से सजनों किसी की ऐसी हालत न हो इस हेतु आत्मज्ञान प्राप्त कर समझदार बनो व संभल जाओ। इस तरह परमार्थ का रास्ता अपना, अपना जीवन सर्वरूपेण सुखमय बना लो। इस संदर्भ में याद रखो कलियुगी कलुषित भाव-स्वभावों से ग्रस्त चरित्रहीन रोगियों के लिए समभाव-समदृष्टि का सबक़ एकमात्र ऐसी निराली दिव्य औषधि है जिसका सेवन करने से हर प्रकार की सोच व विकार वृत्तियों का समूलतः नाश हो जाता है। ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि इस यथार्थ मानवीय आचार-संहिता को आत्मसात् करने से, ज्यों-ज्यों इंसान के मन में समभाव उजागर होता जाता है, त्यों-त्यों उसकी विकार वृत्तियाँ निर्मलता को प्राप्त होती जाती हैं और एक समय ऐसा आता है जब समभाव पूर्णतया हृदय में स्थापित हो जाता है और इंसान बिना किसी अन्य यत्न के निर्विकारी व सदाचारी बन जाता है। सजनों यह परिवर्तन एक अद्‌भुत चमत्कार की तरह होता है क्योंकि ऐसा शुभ होने पर इन्सान को स्वतः ही सहजता से आत्मबोध हो जाता है और वह 'विचार ईश्वर है अपना आप' के भाव पर दृढ़ता से खड़ा हो, एक निगाह एक दृष्टि हो जाता है। फिर दिव्य दृष्टि का सबक प्राप्त कर व संकल्प पर पूरी तरह से फतह पा आवागमन से मुक्त हो जाता है।

इस उपलब्धि के दृष्टिगत सजनों अब और वक्त व्यर्थ न गँवाओ अपितु जाग्रति में आ अपना जीवन सफल बनाओ क्योंकि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ भी कह रहा हैः-

जाग ओ बंदिया वक्त तेरा है जागने दा, हिम्मत न हारीं वक्त न गुजारीं
कर लै प्रभु नूं याद वक्त तेरा है जागने दा।

इस कथन के अनुसार सजनों अब जागो, अब जागो, अब जागो और होश में आ अपना सोया भाग्य जगा लो। ऐसा इसलिए भी कह रहे हैं क्योंकि काल गति अनुसार कलुकाल जा रहा है और सतवस्तु आ रही है। अतः सतवस्तु की आचार-संहिता के अनुकूल भाव-स्वभाव अपनाने हेतु समभाव-समदृष्टि के सबक़ को अमल में लाने में प्रवीण बनो और अपने वास्तविक धर्म पर स्थिर रह, सत्य को प्रतिष्ठित करते हुए, सतयुग में प्रवेश करो।

सबकी जानकारी हेतु आप सब सजन ऐसा करने में कामयाब हो सको इसीलिए तो इस सतयुग दर्शन वसुन्धरा पर परमेश्वर के हुक्म अनुसार ध्यान-कक्ष अर्थात् समभाव-समदृष्टि का स्कूल खोलकर उसमें युक्तिसंगत सजन भाव की पढ़ाई कराई जा रही है। इस संदर्भ में हम तो सभी को यही कहेंगे कि इस पावन धरा वसुन्धरा पर यानि सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के द्वारे पर, समभाव-समदृष्टि के इस स्कूल के खुलने को, परमेश्वर की अपार कृपा मानो क्योंकि यह अपने आप में कलुकाल की आग में झुलसते हुए व त्राहिमाम् करते हुए झुखने-रोने वाले इंसानों को दग्ध-भस्म की कष्टदायक पीड़ा से बचा पुनः जाग्रति में ला प्रसन्नचित्त बनाने का विशेष यत्न है। अतः इस यत्न से लाभ उठाने हेतु, यहाँ प्रदान किए जा रहे समभाव-समदृष्टि के कुदरती अमोलक सबक़ को धारण करो और संतोष, धैर्य की पोशाक पहन व सत्य धर्म के निष्काम रास्ते पर युक्तिसंगत चलते हुए परोपकारी प्रवृत्ति बनो ताकि इस धरा पर पुनः मानव धर्म स्थापित हो जाए और सब सहर्ष मानवता के सिद्धान्त को अपना कर भारत माता को हर्षा दें। याद रखो सजनों यही एकमात्र तरीका है अधम अवस्था से उबर कर उत्तम अवस्था में आने का यानि सजन पुरुष बन एक विवेकी व बुद्धिमान इंसान की तरह अपना जीवन आबाद करने का।

सारतः सजनों हम तो यही कहेंगे कि कुदरत के इस अद्भुत खेल को समझो व एकता में आ पुनः एक अवस्था में स्थित हो जाओ। इस तरह मानवता के सिद्धान्त अनुसार वसुधैव कुटुम्बकम् की कल्पना को साकार कर इस धरती पर पुनः सतयुग जैसा स्वर्णिम युग ले आओ। अंत में याद रखो कि ऐसा सुनिश्चित करना इसलिए आवश्यक है क्योंकि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अंतर्गत परमेश्वर कहते हैं किः-

सतवस्तु में हम प्रगटेंगे, सतवस्तु में हम प्रगटेंगे।
प्रगटेंगे कलाधारी, हम प्रगटेंगे हम प्रगटेंगे हम प्रगटेंगे।।
प्रगटेंगे कलाधारी, प्रगटेंगे कलाधारी, प्रगटेंगे कलाधारी, हम प्रगटेंगे।
हम नेह कलंक लक्ष्मी नारायण प्रगटेंगे, प्रगटेंगे चतुर्भुजधारी, हम हैं कलाधारी।।

अंततः सजनों हम इस सन्दर्भ में सम्पूर्ण विश्व के बुद्धिजीवियों से प्रार्थना करते हैं कि वे संक्रमण के इस महत्त्वपूर्ण काल में एकजुट हो सतयुग दर्शन ट्रस्ट द्वारा मानव जाति के उत्थान के निमित्त किए जा रहे इन अभूतपूर्व प्रयासों में निष्कामता से अपना सहयोग दें और सर्वहितकारी इस समभाव-समदृष्टि की युक्ति व सजन-भाव के संदेश को अमली जामा पहनाने के लिए वैश्विक स्तर पर प्रयत्न करें। हमें पूर्ण विश्वास है कि इस प्रयत्न द्वारा यदि हम सभी संयुक्त रूप से आद् से निर्धारित समभाव-समदृष्टि आधारित ईश्वरीय संविधान को लागू कर व्यक्तिगत स्तर पर उसका पालन करने में सफल हो जाते हैं तो निश्चित ही आपस में द्वि-द्वेष रखने वाले विभिन्न राजनैतिक दलों के स्थान पर, एक ऐसा एकछत्र शासन स्थापित हो सकेगा जिसके अंतर्गत प्रत्येक प्राणी एकात्मा का आभास करते हुए सुख, शांति व आनन्द से जीवन व्यतीत कर सकेगा।

सजनों यदि आप भी ऐसे ही सुख शांति से जीवन व्यतीत करना चाहते हो तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित् सतवस्तु के संविधान को यानि समभाव-समदृष्टि को तत्क्षण अमल में लाते हुए परस्पर सजन भाव का वर्त-वर्ताव करना आरम्भ कर दो और इस तरह अपने सच्चे घर परमधाम पहुँच विश्राम को पाओ।

अंत में सजनों आओ इस शुभ अवसर पर सब मिल कर बोलें:-

समभाव दी होसिवे फतह, समभाव दी होसिवे फतह, समभाव दी होसिवे फतह।
इसी तरह होगा इस धरा पर सतयुग का आगमन

इसी संदर्भ में आओ अब कलुकाल के जाने की खुशी मनाते हैं और मिलकर बोलते हैं:-

देखो
जहान।
एहो दृष्टि
सजनो
INTERNATIONAL
HUMANITY
OLYMPIAD

(महाबीर जी के मुख के शब्द)

कलुकाल जब हटने लगा तो।
वह दिन आने वाला साजन जी, वह दिन आने वाला।
हो....हो....हो....वह दिन आने वाला साजन जी वह दिन आने वाला ।

रोग सोग जगत तों हटनगे।
होसिया जगत सुखाला साजन जी, होसिया जगत सुखाला।
हो.... हो....हो....होसिया जगत सुखाला साजन जी, होसिया जगत सुखाला।।

निन्दया झूठ दे दो शब्द हटनगे।
होसिया जगत उजियाला साजन जी, होसिया जगत उजियाला ।।
हो...हो...हो.... होसिया जगत उजियाला साजन जी, होसिया जगत उजियाला।

सच्चाई धर्म दे दो मन्त्र रटनगे।
फिरसिया इको माला साजन जी, फिरसिया इको माला।।
हो...हो...हो फिरसिया इको माला साजन जी फिरसिया इको माला।।

भिन्न भेद जगत तों हटनगे।
होसिया प्रेम निराला साजन जी, होसिया प्रेम निराला।।
हो....हो....हो होसिया प्रेम निराला साजन जी, होसिया प्रेम निराला।।

इको दी रटन सतवस्तु विच करनगे
श्री विष्णु भगवान हीरे नूं जीव होसिया पछाणन वाला साजन जी,
होसिया पछाणन वाला।।
हो...हो...हो होसिया पछाणन वाला साजन जी, होसिया पछाणन वाला।।

ध्वनिः-

मैं तूं दे विच फरक मत जानो।
अपने हृदय विच राम नाम ही मानो।।
आओ मेरा प्यारा श्री भगवान नाम तुम्हारा।

आपे खेल खिलारिया आपे दित्ता समेट।
जीव नूं पता किस तरह लगे एक हो के अनेक।।

अब हम आदरणीय सजन जी व मैनेजिंग ट्रस्टी श्रीमती रेशमा गाँधी जी से प्रार्थना करते हैं कि वे 'विश्व समभाव दिवस के शुभ अवसर पर एक अच्छा व नेक परमार्थी इंसान बनने हेतु 'मुझ द्वारा लिया गया संकल्प' व 'मानवता फेस्ट 2018' नामक पुस्तकों का विमोचन करें और इस चतुर्थ अंतर्राष्ट्रीय मानवता ओलम्पियाड के विजेताओं व माननीय अतिथियों को पुरस्कृत कर उनका सम्मान बढ़ाएँ।

मानवता फेस्ट 2018 की पुस्तक का विमोचन

पुरस्कार वितरण

लोकसत्ता

लोकसत्ता

4th International
Humanity Olympiad
Promoters:

4th International
Olympiad
SSA

INTERNATIONAL HUMANITY OLYMPIAD
4th International
Olympiad
SSA

Making lea
morrow; b
Promotor
manityolympiad.org

4th Internatio
Humanity Oly
World Equanim
Making leaders of tomorrow; bette
s today.
Promotors:
लोकसत्य
DNL
#humanityolympiad

Humanity Olympiad

पहला एंकरः- कार्यक्रम के अंत में सजनों हम तो यही कहेंगे कि जीवन के परम पुरुषार्थों यथा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सिद्ध करने के लिए समभाव अपना आत्मज्ञानी बनना आवश्यक समझो और अपने मन को सदा संकल्प रहित अवस्था में साधे रखने के लिए परस्पर समदृष्टि अनुरूप आचार-व्यवहार करना आरम्भ कर दो।

दूसरा एंकरः-ऐसा इसलिए भी कह रहे हैं क्योंकि अब हमने जान लिया है किः-

समभाव है तो मन में ऐक्य भाव है
ऐक्य भाव है तो मानवता है

यही मानवता ही हमारा धर्म है। इसी धर्म पर चलने वालों की ही सदा जीत होती आई है और होती रहेगी। आप सब भी सजनों इसी धर्म की मर्यादा की पालना करते हुए ऐसे ही आत्मविजयी बनो।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ, सभी सजनों को जय सीता राम जी।

रिपोर्ट

अनुबंध-1 (Annexure-1)

INTERNATIONAL
HUMANITY
OLYMPIAD

INTERNATIONAL HUMANITY OLMYPIAD

PERFORMANCE REPORT
2018

An initiative of
Satyug Darshan Trust(Regd.)

INTERNATIONAL HUMANITY OLYMPIAD 2018

ABOUT US

To ensure upliftment of individuals, families and society at large by enriching them with moral and ethical values across the world, the Satyug Darshan Trust (Regd.), Faridabad conducts "International Humanity Olympiad" every year. We are a group of young volunteers working selflessly for an enlightened and peaceful tomorrow.

KEY HIGHLIGHTS

- **6.8L+** ATTEMPTS
- **3300+** SCHOOLS
- **20+** STATES
- **24K** TREES SAVED
- **10L+** PAGEVIEWS

Educational Boards Support

Best Performing States

Haryana	2,75,000
Punjab	85,000
Uttar Pradesh	80,000
Delhi	70,000
Rajasthan	20,000
Uttarakhand	11,000
Chandigarh	10,000
Assam	9,000

Online Olympiad Attempts

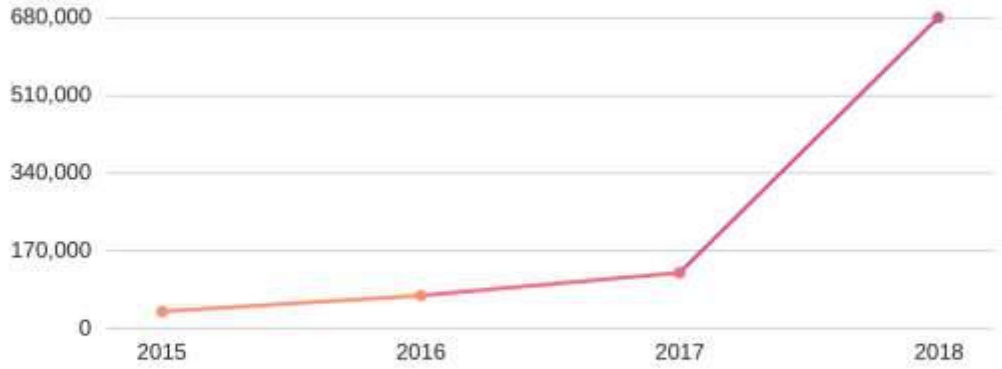

36.8L+ attempts since 2015 (online + offline)

INTERNATIONAL HUMANITY OLYMPIAD 2018

PRIZES

Through this initiative, the present generation is motivated to adopt true human values, thereby laying the foundation stone for a peaceful and blissful tomorrow. No fee was charged from any student, school or college.

School Module

Winner
Jashan Grover,
A.V.I. School, Sirsa
Awarded a Laptop

Next 10 - Smartphones
Next 100 - E-gadgets
Next 1000 - Merchandise

College Module

Winner
Rani Gupta
Kurukshetra University
Awarded a Laptop

Runner-up - Tablet
2nd Runner Up - Smartphone

Individual Module

Winner
Avikash
Kurukshetra
Awarded a 43" TV

Runner-up - Tablet
2nd Runner Up - Smartphone

Top Performing Schools

Modern B.P. Public School	Faridabad
P.M.S. Public School	Moradabad
R.S.B.V	New Delhi
Teja Singh Sutantar Memorial School	Ludhiana
Lord Mahavira Academy	Saharanpur

Olympiad In News

- More than 100 articles published
- Coverage in various Radio and News Channels

Satyug Darshan Trust celebrates World Equanimity Day

Faridabad : World Equanimity Day was celebrated with grand mirth and merriment in the Auditorium of Satyug Darshan Trust located in Village Bhupani, Faridabad. This celebration of Humanity was illuminated in presence of Principal of more than 100 schools

INTERNATIONAL HUMANITY OLYMPIAD 2018

World Equanimity Day Celebration

We express our sincere thanks to all the Principals, School Coordinators, Teachers-in-charge, the Education Departments of Chandigarh, Rajasthan, Haryana, Punjab, Uttarakhand, Delhi, Assam & Uttar Pradesh, our Promoters, Volunteers, Media, Each and every student & individual who appeared for the exam and made 4th International Humanity Olympiad-2018 a success.

Make International Humanity Olympiad - 2019 even better
by sharing your feedback at
bit.ly/humanityolympiadfeedback

+91-9216512515

info@humanityolympiad.org

humanityolympiad.org

#humanityolympiad

MAKING LEADERS OF TOMORROW, BETTER HUMAN BEINGS TODAY

Media Coverage

रविवार 16 सितंबर 2018

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

मानवता-ई-ओलम्पियाड के पुरस्कार वितरण समारोह सम्पन्न

विराट वैभव

नई दिल्ली, रविवार, 16 सितम्बर 2018

मानवता-ई-ओलंपियाड के पुरस्कार वितरण समारोह संपन्न

फरीदाबाद दर्शन

शुक्रवार, 14 सितम्बर 2018

सतयुग दर्शन ट्रस्ट के परिसर में विश्व समभाव-दिवस धूमधाम से मनाया गया

दैनिक करंट क्राइम

नई दिल्ली।। शुक्रवार ।। 14 सितम्बर-2018।।

चतुर्थ मानवता ई.ओलम्पियाड पुरस्कार वितरण समारोह संपन्न

हिन्दुस्तान

ओलंपियाड विजेता को पुरस्कृत किया

फरीदाबाद केसरी

MONDAY, SEP 10, 2018. FARIDABAD KESARI

सतयुग दर्शन ट्रस्ट में मनाया विश्व समभाव-दिवस

वीरवार 13 सितंबर 2018

सिटी मीडिया

सतयुग दर्शन ट्रस्ट द्वारा विश्व समभाव-दिवस चतुर्थ मानवता ई-आलम्पियाड का पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस — शनिवार 08 सितंबर 2018 — फरीदाबाद/एटा

सतयुग दर्शन ट्रस्ट में धूमधाम से मनाया विश्व समभाव-दिवस

चतुर्थ मानवता ई-आलमिपयाड का पुरस्कार वितरण

राष्ट्रीय — आज का दिन — एक्शन इंडिया दैनिक — नई दिल्ली • 08 सितंबर 2018

धूमधाम से मना विश्व समभाव दिवस

समभाव-समदृष्टि का सबक पढना व उसका व्यवहारिक रूप गहनता से समझना आवश्यक

लिए गए अवॉर्ड

● धूमधाम से विश्व समभाव दिवस मनाया गया एवं इस शुभावसर पर चतुर्थ मानवता ई-आलमिपयाड का पुरस्कार वितरण भी किया गया।

फरीदाबाद/एक्शन इंडिया ब्यूरो
सब की जानकारी हेतु सतयुग दर्शन वसुंधरा के परिसर में बड़े ही धूमधाम से विश्व समभाव दिवस मनाया गया एवं इस शुभावसर पर चतुर्थ मानवता ई-आलमिपयाड का पुरस्कार वितरण भी किया गया। कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने हेतु दूर-दराज से विभिन्न स्कूलों के लगभग १०० से अधिक प्रधानाचार्य, फरीदाबाद के माने हुए उद्योगपति व हजार से अधिक विद्यार्थी अपने परिवार सहित पधारे हुए थे। इसके अतिरिक्त इस कार्यक्रम में गेस्ट ऑफ आनॅर के रूप में फरीदाबाद व सिरसा के जिला शिक्षा अधिकारी यानि डी. ई. ओ. डा१टर वर्मा व श्रीमती सतीन्द्र कौर, एमस आई एस आफिसर एवं मोटिवेशनल स्पीकार विवेक अत्रे, जाने माने उद्घोषक तथा दूरदर्शन के लोकप्रिय न्यूज रीडर शम्मी नारंग, सबसे तेज पियानो वादक अमन बाटला आदि भी पधारे हुए थे। कार्यक्रम के आरम्भ में ट्रस्ट के मार्गदर्शक श्री सजन जी ने सबका हार्दिक अभिनंदन किया और कहा कि हर मानव के लिए अपने यथार्थ स्वरूप में सदा एकरस बने रह, मानवता के सिद्धान्त पर सुदृढ़ बने रहने हेतु, समभाव-समदृष्टि का सबक पढना व उसका व्यवहारिक रूप गहनता से समझना आवश्यक है। अतः समभाव-समदृष्टि के सबक अनुसार, समभाव नजरों में कर, समदर्शिता अनुरूप परस्पर सजनता का यानि मैत्रीपूर्ण व्यवहार करो। इस हेतु अपना जीवन अपने आराध्य यानि इस जगत के पालनकर्ता के प्रति पूरी तरह अर्पित कर दो और निष्कामता से उनकी चरण-शरण में रह उनके गुण, ज्ञान व शक्ति को ग्रहण कर, इस जगत की पालना हेतु अपना वांछित सहयोग प्रदान करो उन्होंने कहा कि याद रखो समभाव ही एकमात्र ऐसा सशक्त भाव है जो हर मानव के ह्रदय में मानव धर्म को उजागर करता है। यह ही अपने आप में मानवता के समस्त गुणों से सम्पूर्ण है तथा मानव के यथार्थ धर्म का परिचायक है। इस धर्म पर स्थिर बने रहने वाले समभावी के ह्रदय में ही सदा सत्य प्रकट रहता है और उसके अन्दर परिपूर्णता का एहसास रहता है व आत्मतुष्टि बनी रहती है। इस तथ्य के दृष्टिगत हमारे लिए बनता है कि हम एकता व सारे सुख का आधार धर्म को ही मानकर कभी भी किसी भी अवस्था व किसी भी परिस्थिति में धर्म मत हारें अपितु धर्म के ऊपर अपना तन मन धन सब वार दें। जानो ऐसा करने पर ही हम सबकी शान है। इस संदर्भ में आगे उन्होंने कहा कि समय के आवाहन को समझो।

सिरसा के जश्न व रेवाड़ी की रानी प्रथम

सतयुग दर्शन ट्रस्ट परिसर में हर्षोल्लास के साथ मनाया विश्व समभाव दिवस, ऑनलाइन परीक्षा के विजेता हुए पुरस्कृत

एक्शन इंडिया दैनिक

नई दिल्ली • 08 सितम्बर 2018

राष्ट्रीय

आज का दिन: 1962- चीन ने भारत की पूर्वी सीमा में घुसपैठ किया।

धूमधाम से मना विश्व समभाव दिवस

समभाव-समदृष्टि का सबक पढ़ना व उसका व्यवहारिक रूप गहनता से समझना आवश्यक

विराट वैभव

नई दिल्ली, शनिवार, 08 सितम्बर 2018

पुरस्कार | चतुर्थ मानवता ई-ओलम्पियाड का पुरस्कार वितरण

सतयुग दर्शन ट्रस्ट में धूमधाम से मनाया विश्व समभाव-दिवस

वैभव न्यूज ■ फरीदाबाद

फरीदाबाद

शुक्रवार, 06 सितम्बर 2018

हिन्दुस्तान

SATYUG DARSHAN TRUST

INTERNATIONAL HUMANITY OLYMPIAD

निमंत्रण

खुशखबरी, खुशखबरी, खुशखबरी

आनन्द की बेला आ गई

क्योंकि

दिनाँक 7 सितम्बर 2018

विश्व समभाव दिवस के शुभावसर पर

सम्पन्न होने जा रहा है

आपका अखबार-आपके समाचार

गुड़गाव मेल

साइबर सिटी का हिंदी दैनिक

SATYUG DARSHAN TRUST

INTERNATIONAL HUMANITY OLYMPIAD

निमंत्रण

खुशखबरी, खुशखबरी, खुशखबरी

आनन्द की बेला आ गई

क्योंकि

दिनाँक 7 सितम्बर 2018

विश्व समभाव दिवस के शुभावसर पर

सम्पन्न होने जा रहा है

दैनिक भास्कर

अंतर्राष्ट्रीय मानवता ई-ओलंपियाड-2018 का परिणाम घोषित

सतयुग दर्शन ट्रस्ट में धूमधाम से मनाया गया विश्व समभाव-दिवस

मानवता अपनाओ सुखी हो जाओ

आज के युग में विद्यार्थियों व आमजन में उच्च नैतिक कदरों-कीमतों का होना बेहद लाजिमी है, इन सबके उल्ट आज का युवा वर्ग व विद्यार्थी अपनी संस्कृति, शिष्टाचार और नैतिकता को भूलते जा रहे है, जो कि समाज के लिए अच्छा संकेत नही। आज की युवा पीढ़ी को नई दिशा दिखाने के लिए सतयुग दर्शन ट्रस्ट का इस साल चौथा अंतर्राष्ट्रिय मानवता ई-ओलोपयाड्-2018 चल रहा है।

इस ओलोपयाड् में किसी भी उम्र जाति वर्ग या सम्प्रदाय का कोई सज्जन बिना किसी भेदभाव के ऑनलाइन परीक्षा दे सकता है। शहर के विभन्न स्कूलों में इन परिक्षों का सफल आयोजन किया जा चुका है। बच्चें बड़ी दिलचस्पी से परीक्षा में हिस्सा ले रहें है। 14 अगस्त को परीक्षा होटल स्काईलाक में श्री मती आरती और श्री कपिल धीर के सहयोग से करवाई गई।

जिसमें बड़े, बच्चे, बुजुर्ग, लड़कियां ने बड़ी सोच और उत्सुकता से हिस्सा लिया। इस सफल आयोजन का उदेश्य आज की पीढ़ी को मानवता की ओर लें जाना था। परिक्षा के आयोजन में संस्थान के प्रबंधकों का अहम योगदान था।

सतयुग दर्शन ट्रस्ट के वालंटियर्स सुमित कपूर, पूजा कपूर, रीना सहगल, रेखा चड्ढा, सुमित सिक्का, उपमा सिक्का, किरन बाला, प्रियंका जग्गा, सरोज बाला, मोहित कपूर, अर्मत कपूर, मीनाक्षी वर्मा, मनीशा, मीनू रवेहरा, गुनगुन जतिन, निशा सिक्का। पूरी निष्ठा से युवाओं में नैतिक व मानवीय कदरों कीमतों का बीज रोहित करने को प्रयासरत है।

हाड़ौती अधिकार दैनिक, फरीदाबाद, बुधवार, 5 सितम्बर, 2018

अंतर्राष्ट्रीय मानवता ई-ओलम्पियाड-2018 का परिणाम घोषित

दैनिक जागरण लुधियाना 31 अगस्त 2018

बदी से नेकी की ओर ले जाने वाला अनोखा मानवता-ई-ओलम्पियाड

जालंधर सवेरा टाइम्स

जागरण सिटी फिरोजपुर/अबोहर/फाजिल्का

सतयुग ट्रस्ट मेधावियों का 7 को करेगा सम्मान

अमर भारती
शनिवार, 01 सितम्बर 2018 नई दिल्ली

सतयुग दर्शन ट्रस्ट ने चलाया मानवता अभियान

- नैतिक मूल्यों पर आधारित ऑनलाईन परीक्षा के विजेताओं को किया जाएगा पुरस्कृत

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

अंतर्राष्ट्रीय मानवता ई-ओलम्पियाड-2018 का परिणाम घोषित

ज्योति दर्पण

मानवता-ई-ओलम्पियाड 2018

एक्शन इंडिया दैनिक

नई दिल्ली • 01 सितंबर 2018 •

मानवता-ई-ओलम्पियाड का हुआ आयोजन

बरेली महानगर

अन्तर्राष्ट्रीय मानवता ई-ओलम्पियाड 2018 का बढ़ रहा क्रेज

सतयुग दर्शन ट्रस्ट करा रहा अनूठा आयोजित

THE IMPRESSIVE TIMES

New Delhi, 26 Aug.- 01 Sept. 2018

Young Volunteers of Humanity Development Club Encouraged by Eminent Personalities from Different Fields for Organising 4th International Humanity Olympiad

Faridabad : Satyug Darshan Trust, Faridabad - working with an objective of alleviating physical, mental and spiritual sufferings of Humanity established Humanity Development Club (HDC) to share this exceptional responsibility with Youth of society. The selfless Young Volunteers of HDC with benevolent intention to nurture innate human and moral values - devised a unique 4th International Humanity Olympiad resonating with a concept of virtuous Digital India?

This free of cost 45 minute interactive online test available on www.humanityolympiad.org in a format of Multiple Choice Questions - has received appreciation and encouragement from all quarters. Padmashri and Renowned Kathak Exponent Shovana Narayan praised the efforts of Satyug Darshan Trust for initiating an Olympiad focusing on inner cleanliness. She said, "I am Delighted to see an initiative being taken to ensure that our future leaders are Good Citizens and Good Human Beings." She further encouraged all to participate in this Olympiad. Mr. Vivek Atray - Inspirational Motivational Speaker, Author and Ex-IAS lauded the objective of HDC to spread moral and human values to society and added that this is one of the foremost initiatives of its kind in the country. He said, "Everyone wants to be an achiever and is running behind materialistic things but its deeper meaning of life that is important."

Mr. Sabir Malik - Founder, Organist, and Manager of Rock Band at Parikrama gave a big Thumbs Up to Humanity Development Club and requested all to be a part of this Olympiad to make it a great event. Satyug Darshan Trust celebrates World's Equanimity day every year on 7th September at its Faridabad Campus. To make Humanity Olympiad more engaging for Students, Satyug Darshan Trust will distribute Uber cool prizes like laptop, tablets, Smartphones and other HDC customized merchandise to winning Students and Schools on this day. An open invitation is extended to all to grace this occasion in person to benefit themselves as well as entire society. The "Awake Humanity" app is available on playstore for Android users. For more details reach out to www.humanityolympiad.org and www.facebook.com/humanityolympiad/

दैनिक भास्कर

फतेहाबाद, बुधवार 30 अगस्त, 2018 | 04

बच्चों को ऑनलाइन परीक्षा के बारे में दी जानकारी

फतेहाबाद | किशनपुरा स्थित राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल में बुधवार को सतयुग दर्शन ट्रस्ट एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। बच्चों को ऑनलाइन होने वाली परीक्षा के बारे में जानकारी दी गई। समिति के सदस्यों ने बताया कि बच्चों के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित मानवता ई-ओलम्पियाड कार्यक्रम में कुछ ऑनलाइन वेबसाइट पर जाकर अंग्रेजी एवं हिंदी किसी भी माध्यम में परीक्षा दे सकते हैं। परीक्षा में पास होने वाले बच्चों

यमुनानगर केसरी

THURSDAY 30 अगस्त 2018

नैशनल कालेज ऑफ पॉलीटैक्निक में हुआ अंतर्राष्ट्रीय ई-ओलिम्पियाड का आयोजन

दैनिक भास्कर

आयोजन | सतयुग दर्शन ट्रस्ट के परिसर में मनाया गया विश्व समभाव-दिवस

'समभाव-समदृष्टि का सबक लेना अति आवश्यक'

गुड़गांव मेल

गुड़गांव, सोमवार, 27 अगस्त 2018

बदी से नेकी की ओर ले जाने वाला अनोखा मानवता-ई-ओलम्पियाड

NEW DELHI | FRIDAY 24 AUGUST 2018 | The Impressive Times

YOUNG VOLUNTEERS OF HUMANITY DEVELOPMENT CLUB ENCOURAGED BY EMINENT PERSONALITIES FROM DIFFERENT FIELDS FOR ORGANISING 4TH INTERNATIONAL HUMANITY OLYMPIAD

Deepti Arora
info@impressivetimes.com

FARIDABAD: Satyug Darshan Trust, Faridabad - working with an objective of alleviating physical, mental and spiritual sufferings of Humanity established Humanity Development Club (HDC) to share this exceptional responsibility with Youth of society. The selfless Young Volunteers of HDC with benevolent intention to nurture innate human and moral values - devised a unique 4th International Humanity Olympiad resonating with a concept of virtuous Digital India. This free of cost - 15-minute Introspective online test - available on www.humanityolympiad.org in a format of Multiple Choice Questions - has received appreciation and encouragement from all quarters. Padmashri and Renowned Kathak Exponent Shovana Narayan praised the efforts of Satyug Darshan Trust for initiating an Olympiad focusing on inner cleanliness. She said, "I am Delighted to see an initiative being taken to ensure that our future leaders are Good Citizens and Good Human Beings." She further encouraged all to participate in this Olympiad. Mr. Vivek Atray - Inspirational Motivational Speaker, Author and Ex-IAS lauded the objective of HDC to spread moral and human values to society and added that this is one of the foremost initiatives of its kind in the country. He said, "Everyone wants to be an achiever and is running behind materialistic things but its deeper meaning of life that is important."

THE SELFLESS YOUNG VOLUNTEERS OF HDC WITH BENEVOLENT INTENTION TO NURTURE INNATE HUMAN AND MORAL VALUES - DEVISED A UNIQUE 4TH INTERNATIONAL HUMANITY OLYMPIAD RESONATING WITH A CONCEPT OF VIRTUOUS DIGITAL INDIA.

Mr. Sabir Malik - Founder, Organist, and Manager of Rock Band at Parikrama gave a big Thumbs Up to Humanity Development Club and requested all to be a part of this Olympiad to make it a great event. Satyug Darshan Trust celebrates World's Equanimity day every year on 7th September at its Faridabad Campus. To make Humanity Olympiad more engaging for Students, Satyug Darshan Trust will distribute Uber cool prizes like laptops, tablets, Smartphones and other HDC customized merchandise to winning Students and Schools on this day. An open invitation is extended to all to grace this occasion in person to benefit themselves as well as entire society. The "Awake Humanity" app is available on playstore for Android users. For more details reach out to www.humanityolympiad.org and www.facebook.com/humanityolympiad

विराट वैभव

बदी से नेकी की ओर ले जाने वाला अनोखा मानवता-ई-ओलम्पियाड

मुरादाबाद • शनिवार • 25 अगस्त 2018 • हिन्दुस्तान

कैंपस

शुक्रवार को ऑनलाइन ओलंपियाड प्रतियोगिता में भाग लेते लोग।

ऑनलाइन ओलंपियाड स्पर्धा आयोजित

मुरादाबाद। सतयुग दर्शन ट्रस्ट की ओर से मानवता जगाने को एक प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। ऑन लाइन ओलंपियाड का नाम देकर इसमें 25 सवाल पूछे जा रहे हैं। इन सवालों को पंद्रह मिनट में हल करना होता है। ट्रस्ट से जुड़े विशाल सिक्का ने बताया कि इस ऑन लाइन ओलंपियाड में तमाम लोग जुड़ रहे हैं। इसमें विजेताओं को आकर्षक इनाम भी जैसे लैपटाप, मोबाइल फोन टीवी आदि भी दिए जा रहे हैं। प्रतियोगिता में तीस अगस्त तक भाग लिया जा सकता है। मुरादाबाद में आर्य समाज, रेलवे स्टेशन समेत की स्कूलों के लोग शामिल हुए हैं।

हिसार, बुधवार, 19 जुलाई 2018

दैनिक जागरण

सिरसा

अंतरराष्ट्रीय मानवता ओलंपियाड का 21 से होगा आयोजन

प्रश्नों की संख्या

यमुनानगर

रविवार • 19.08.2018

अमर उजाला

अंतरराष्ट्रीय मानवता ओलंपियाड परीक्षा से सीखा नैतिकता का पाठ

बरेली, 25 अगस्त 2018

बरेली महानगर

अंतरराष्ट्रीय मानवता ई.ओलंपियाड 30 अगस्त तक

जालंधर भास्कर

नैतिक मूल्यों के लिए ट्रस्ट ने करवाई निशुल्क ऑनलाइन ओलंपियाड परीक्षा

अमर उजाला

मेरठ | बृहस्पतिवार, 23 अगस्त 2018 | 5

संस्कारों को बचाने का ओलंपियाड

बच्चों से लेकर बुजुर्ग भी हो सकते हैं शामिल

सहारनपुर के 15 हजार बच्चे ले चुके हैं भाग

दैनिक जागरण

5

सहारनपुर, 23 अगस्त 2018

ई-ओलंपियाड 2018 का होगा आयोजन

संवाद सहयोगी, गंगोह : सतयुग दर्शन ट्रस्ट द्वारा चतुर्थ अंतर्राष्ट्रीय मानवता ई-ओलंपियाड 2018 का आयोजन किया जा रहा है। ऑनलाइन होने वाली परीक्षा अनेक विषयों पर प्रश्न पूछे जाएंगे।

कोर्डिनेटर प्रदीप खुराना एवं राजीव पाहवा ने बताया कि पूरी तरह निःशुल्क इस परीक्षा के अंतर्गत कुल 25 प्रश्नों का समावेश किया गया है। परीक्षा की एक खास विशेषता यह है कि परीक्षार्थी अंग्रेजी एवं हिन्दी किसी भी माध्यम में परीक्षा दे सकते है और परीक्षा देने के उपरान्त तुरंत अपना परिणाम एवं ई-सार्टिफिकेट प्राप्त कर सकते है। इस वर्ष पेपर वेस्टेज को बचाने एवं डिजिटल इंडिया को प्रोत्साहित करने के लिए परीक्षा को पूरी तरह आन लाईन रखा गया है। उन्होंने बताया कि जिला विद्यालय निरीक्षक द्वारा भी जनपद के सभी विद्यालयों में कक्षा 6 से 12 तक की कक्षाओं में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को अनिवार्य रूप से उक्त परीक्षा में शत प्रतिशत प्रतिभाग कराने के निर्देश जारी किये है।

प्रदीप खुराना एवं राजीव पाहवा ने बताया कि जिला सहारनपुर में अब तक 15 हजार बच्चे यह परीक्षा दे चुके है, जबकि गत वर्ष देशभर में 30 लाख लोगों ने उक्त परीक्षा में भाग लिया था। बताया कि परीक्षा के लिए परीक्षार्थी को वेब साईट पर लॉग इन कर अपनी जानकारी भरनी होगी।

दैनिक सिटी

नई दिल्ली - 25 अगस्त से 31 अगस्त 2018

सतयुग दर्शन ट्रस्ट द्वारा आयोजित अनूठा अंतर्राष्ट्रीय मानवता ई-ओलम्पियाड-2018

दैनिक जागरण

सिरसा

16 दैनिक जागरण हिसार, 24 जुलाई 2018

एक नजर

आरकेवी स्कूल में हुई ओलंपियाड परीक्षा

सिरसा : सतयुग दर्शन ट्रस्ट फरीदाबाद द्वारा करवाए जा रहे अंतरराष्ट्रीय मानवता ओलंपियाड 2018 के तहत सोमवार को आरकेवी नेहरू पार्क सीनियर सेकेंडरी स्कूल में परीक्षा आयोजित की गई। प्राचार्य अजय आजाद ने बताया कि बच्चों ने बड़े ही उत्साह से परीक्षा दी व उन्होंने ने सभी परीक्षा दी। उन्होंने ओलंपियाड टीम का बहुत आभार प्रकट किया व सरकार से अनुरोध किया कि इस प्रकार की परीक्षाएं वर्ष में दो बार करवाई जाए ताकि बच्चों का नैतिक पतन होने से बच सके और उनका चरित्र निर्माण हो सके। ओलंपियाड परीक्षा में कक्षा 6 से 12 तक के विद्यार्थी भाग ले सकते है। यह परीक्षा ऑनलाइन है। (जास)

जालंधर सवेरा टाइम्स

दिल्ली एक्शन इंडिया दैनिक

नई दिल्ली ● 23 अगस्त 2018

सतयुग दर्शन ट्रस्ट ने आयोजित किया अनूठा अंतर्राष्ट्रीय मानवता ई-ओलम्पियाड-2018

HINDUSTAN TIMES, CHANDIGARH
SUNDAY, AUGUST 12, 2018

Fourth int'l humanity olympiad begins

CHANDIGARH: The Satyug Darshan Trust kicked off the international humanity olympiad on Saturday. The olympiad will continue till August 30 and a prize distribution ceremony

my city करनाल

संस्कारों को बचाने का ओलंपियाड, बच्चों से लेकर बुजुर्ग भी हो सकते हैं शामिल

कौमी पत्रिका

गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, शनिवार 18 अगस्त, 2018

नैतिक मूल्यों पर आधारित आनलाईन परीक्षा का आयोजन

सतयुग दर्शन ट्रस्ट के कार्यक्रम में बोले आईटी मंत्री एस एस अहलुवालिया नैतिक शिक्षा जरूरी

नई दिल्ली। सतयुग दर्शन ट्रस्ट द्वारा नैतिक शिक्षा पर आधारित चतुर्थ अंतर्राष्ट्रीय मानवता ई ओलम्पियाड-2018 का आयोजन किया गया है। आनलाइन आयोजित 15 मिनट की इस परीक्षा को किसी भी उम्र, जाति, वर्ण या सम्प्रदाय का कोई भी व्यक्ति बिना किसी भेदभाव के दे सकता

है। इस परीक्षा के अंतर्गत कुल मिलाकर 25 बहुविकल्पीय रुचिकर चित्रात्मक प्रश्नों का समावेश किया गया है जोकि किसी भी धर्म विशेष से सम्बन्धित न होकर पूरी तरह एक मानव के जीवन में नैतिक मानवीय मूल्यों को धारने की आवश्यकता को दर्शाते है।

पूरी तरह निःशुल्क आनलाईन परीक्षा के टॉप हजार विजेताओं को लैपटाप, टेबलेट, स्मार्टफोन, टी0वी0, ई-गेजेटस व अन्य आकर्षण इनाम इत्यादि प्रदान करने का प्रावधान रखा गया है। आयोजनकर्ता ट्रस्ट प्रवक्ता के मुताबिक गत तीन वर्षो से इस परीक्षा का सफलतापूर्वक आयोजन किया जा रहा है व इससे लाभान्वित हो लगभग 30 लाख बच्चों व पारिवारिक सदस्यों में एक अच्छा इंसान बनने की उमंग जागरूक की है। देश के इलेक्ट्रानिक्स एवं आई0 टी0 मंत्री एस0 एस0 अहलूवालिया ने कहा कि नैतिक चरित्र हमारे जीवन का बहुत महत्वपूर्ण पक्ष है। भौतिक समृद्धि चाहे हमें कितना ही सुख प्रदान क्यों न कर दे लेकिन नैतिक मूल्यों की धारणा से ही व्यक्ति उच्च व सही तरीके से जीवन जीने योग्य बनता है।

परिचय टाइम्स, दिल्ली, शनिवार 18 अगस्त, 2018

सतयुग दर्शन ट्रस्ट द्वारा आयोजित अनूठा अंतर्राष्ट्रीय मानवता ई-ओलम्पियाड-2018

सभी को सुखनार्थ वैश्विक स्तर पर स्कूली छात्रों व जन सामान्य में उच्च नैतिक मानवीय मूल्यों की स्थापना द्वारा सदाचार का मार्ग प्रशस्त करने हेतु सतयुग दर्शन ट्रस्ट द्वारा चतुर्थ अंतर्राष्ट्रीय मानवता ई-ओलम्पियाड-2018 का आयोजन किया गया है। आनलाइन आयोजित 15 मिनट की इस परीक्षा को किसी भी उम्र, जाति, वर्ण या सम्प्रदाय का कोई भी सज्जन बिना किसी भेदभाव के दे सकता है। इस परीक्षा के अंतर्गत कुल मिलाकर 25 बहुविकल्पीय रुचिकर चित्रात्मक प्रश्नों का समावेश किया गया है जोकि किसी भी धर्म विशेष से सम्बन्धित न होकर पूरी तरह एक मानव के जीवन में नैतिक मानवीय मूल्यों को धारने की आवश्यकता को दर्शाते है। परीक्षा की एक खास विशेषता यह है कि यह परीक्षा परीक्षार्थी अंग्रेजी एवं हिन्दी किसी भी माध्यम में दे सकते हैं व परीक्षा देने के उपरांत तुरन्त अपना परिणाम व ई-सर्टिफिकेट प्राप्त कर सकते हैं। यही नहीं वैश्विक स्तर पर मानवता अपना कर परिवर्तन बनने का संदेश प्रसारित करने हेतु सज्जनों इस परीक्षा को पूरी तरह निःशुल्क रखा गया है तथा टॉप हजार विजेताओं को लैपटाप, टेबलेट, स्मार्टफोन, टी0वी0, ई-गैजेटस व अन्य आकर्षक इनाम इत्यादि प्रदान करने का प्रावधान रखा गया है।

दैनिक भास्कर

अलवर

चतुर्थ अंतरराष्ट्रीय मानवता ई-ओलम्पियाड का आयोजन

www.humanityolympiad.org

स्कूल में नैतिक मूल्यों पर परीक्षा

यमुनानगर के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कैंप में सोमवार को कार्यक्रम में बच्चों को संबोधित करते वक्ता।-हप्र

यमुनानगर (हप्र) : राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कैंप में आज कक्षा छह से आठ के लिये सतयुग दर्शन ट्रस्ट द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय सम्भाव ओलम्पियाड का आयोजन किया गया। इस ओलम्पियाड के अंतर्गत मानवता, सदाचार व नैतिक मूल्यों पर आधारित, एक परीक्षा के द्वारा, प्रत्येक मानव को, समानता का भाव अपना कर, अच्छा मानव बनने के लिए प्रेरित किया गया ताकि सभी आत्मनिरीक्षण द्वारा इसके प्रति अपनी नैतिक अवस्था के स्तर का सही आकलन कर, मानव होने की गरिमा में बने रह सकें। प्रतियोगिता से पहले ट्रस्ट के स्वयंसेवियों पवन वधवा, मनु दुआ, अनीता खिल्वानी, मंजू खिल्वानी, वनिता वाधपाल द्वारा बच्चों को संबोधित किया गया। प्रतियोगिता का समन्वयन विद्यालय के ही विज्ञान अध्यापक दर्शन लाल बवेजा ने किया। बच्चों को मौके पर ही परिणाम बताकर ऑनलाइन मेरिट प्रमाणपत्र दिये गए।

दैनिक जागरण चंडीगढ़, 12 अगस्त 2018

अंतरराष्ट्रीय मानवता ई-ओलंपियाड परीक्षा करवाई

अमृत इंडिया नई दिल्ली, शुक्रवार 17 अगस्त 2018

सतयुग दर्शन ट्रस्ट द्वारा आयोजित अनूठा अंतर्राष्ट्रीय मानवता ई ओलम्पियाड-2018

दिल्ली-एनसीआर

नैतिक मूल्यों पर आधारित ऑनलाईन परीक्षा का आयोजन

सतयुग दर्शन ट्रस्ट के कार्यक्रम में बोले आईटी मंत्री एस एस अहलुवालिया नैतिक शिक्षा जरूरी

परिचय टाइम्स, दिल्ली, शनिवार 18 अगस्त, 2018

सतयुग दर्शन ट्रस्ट द्वारा आयोजित अनूठा अंतर्राष्ट्रीय मानवता ई-ओलम्पियाड-2018

सभी को सुखनार्थ वैश्विक स्तर पर स्कूली छात्रों व जन सामान्य में उच्च नैतिक मानवीय मूल्यों की स्थापना द्वारा सदाचार का मार्ग प्रशस्त करने हेतु सतयुग दर्शन ट्रस्ट द्वारा चतुर्थ अंतर्राष्ट्रीय मानवता ई-ओलम्पियाड-2018 का आयोजन चित्रात्मक प्रश्नों का समावेश किया गया है जोकि किसी भी धर्म विशेष से सम्बन्धित न होकर पूरी तरह एक मानव के जीवन में नैतिक मानवीय मूल्यों को धारने की आवश्यकता को दर्शाते है। परीक्षा की एक खास विशेषता यह है कि बनने का संदेश प्रसारित करने हेतु सज्जनों इस परीक्षा को पूरी तरह निःशुल्क रखा रखा गया है तथा टॉप हजार विजेताओं को लैपटाप, टेबलेट, स्मार्टफोन, टी0वी0, ई-गैजेटस व अन्य आकर्षण इनाम इत्यादि प्रदान

दिल्ली

नई दिल्ली • सोमवार • 13 अगस्त 2018 • हिन्दुस्तान

अंतर्राष्ट्रीय मानवता ई-ओलंपियाड

नई दिल्ली (का.सं.)। वैश्विक स्तर पर स्कूली छात्रों व जन सामान्य में उन्नत नैतिक मानवीय मूल्यों की भावना को जागृत करने के लिए सतयुग दर्शन ट्रस्ट द्वारा अंतर्राष्ट्रीय मानवता ई-ओलम्पियाड-2018 का आयोजन किया जा रहा है। ट्रस्ट से जुड़ी श्वेता अरोड़ा ने बताया कि आयोजन 31 अगस्त तक चलेगा।

HINDUSTAN TIMES, CHANDIGARH
SUNDAY, AUGUST 12, 2018

Youth in humanity olympiad begins

रेवाड़ी-नारनौल- महेन्द्रगढ़ | 28 जुलाई 2018, शनिवार

दैनिक सवेरा | जालंधर सवेरा 5

www.dainiksaveratimes.com

'सतयुग दर्शन ट्रस्ट' युवाओं को दिखा रहा नई दिशा

▶▶ ट्रस्ट अपने 'अंतर्राष्ट्रीय मानवता ई-ओलंपियाड-2018' प्रोजेक्ट के तहत ले रहा है ऑनलाइन परीक्षा

रेवाड़ी-महेंद्रगढ़ केसरी
SATURDAY 28 जुलाई 2018

www.punjabkesari.in

सैमीनार में दिया विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर जोर

अमर उजाला
शनिवार • 28.07.2018 रेवाड़ी

गांव बुड़ौली के स्कूल में ओलंपियाड की ऑनलाइन परीक्षा के बारे में दी जानकारी

बुधवार 25 जुलाई 2018

सिटी मीडिया

सतयुग दर्शन ट्रस्ट द्वारा आयोजित अनूठा अंतर्राष्ट्रीय मानवता ई-ओलम्पियाड-2018

www.humanityolympiad.org

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

स्कूली बच्चों ने किया सतयुग दर्शन वसुंधरा ट्रस्ट का अवलोकन

विश्व वैभव

बच्चों ने किया सतयुग दर्शन वसुंधरा ट्रस्ट का अवलोकन

बच्चों को अच्छा इंसान बनने के लिए किया प्रेरित

कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए।

जमालपुर (रामसरन) : राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कैम्प में आज कक्षा छः से अब के लिए सतयुग दर्शन ट्रस्ट द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय मानवता ओलंपियाड का आयोजन किया गया। इस ओलंपियाड के अंतर्गत मानवता,

दैनिक जागरण नई दिल्ली, 1 सितंबर 2018

मानवता ई-ओलंपियाड की होगी ऑनलाइन परीक्षा

सतयुग दर्शन ट्रस्ट की अंतरराष्ट्रीय मानवता ई-ओलंपियाड 2018 में भाग लेते विद्यार्थी। • जागरण

जासं, फरीदाबाद: सतयुग दर्शन ट्रस्ट की ओर से अंतरराष्ट्रीय मानवता ई-ओलंपियाड 2018 का आयोजन किया जा रहा है। ट्रस्ट के कोर्डिनेटर ने बताया कि इसके तहत 15 मिनट की ऑनलाइन परीक्षा देनी होती है। इस परीक्षा को किसी भी उम्र, जाति, वर्ग या संप्रदाय का कोई भी व्यक्ति दे सकता है।

ऑनलाइन परीक्षा में कुल 25 बहु विकल्पीय रुचिकर चित्रात्मक प्रश्नों का जवाब देना होता है। ये ऑनलाइन परीक्षा हिंदी अथवा अंग्रेजी किसी भी माध्यम में दी जा सकती है। परीक्षा देने के बाद तुरंत अपना परिणाम और ई-प्रमाण पत्र प्राप्त किया जा सकता है। इस परीक्षा को निःशुल्क रखा गया है। टॉप एक हजार विजेताओं को आकर्षक पुरस्कार दिए जाएंगे। सात सितंबर को सभाभाव दिवस के मौके पर सतयुग दर्शन ट्रस्ट की ओर से ये सभी पुरस्कार वितरित किए जाएंगे। कोर्डिनेटर ने बताया कि ट्रस्ट की ओर से पिछले तीन वर्षों से यह परीक्षा ऑफलाइन आयोजित की जा रही थी। कागज की बचत करने और डिजिटल इंडिया से प्रेरित होकर इस बार इस परीक्षा को पूरी तरह ऑनलाइन रखा गया है।

आज समाज
नई दिल्ली, शनिवार, 8 सितम्बर 2018

सिरसा के जशन और रेवाड़ी की रानी बने ओलंपियाड विजेता

फरीदाबाद। भूपानी स्थित सतयुग दर्शन वसुंधरा में शुक्रवार को विश्व समभाव दिवस और चतुर्थ मानवता ई.ओलंपियाड पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। मौके पर बतौर मुख्य अतिथि जिला शिक्षा अधिकारी सतेंद्र कौर वर्माए मोटिवेशनल स्पीकर विवेक अत्रे, जाने.माने उद्घोषक शम्मी नारंग और पियानो वादक अमन बाटला पहुंचे। कार्यक्रम की शुरुआत ट्रस्ट के मार्गदर्शक सजन जी ने सबके स्वागत के साथ की। इसके बाद उन्होंने मानवता के बारे में लोगों को संबोधित किया। मौके पर

फरीदाबाद

SATYUG DARSHAN TRUST
INTERNATIONAL HUMANITY OLYMPIAD

निमंत्रण

खुशखबरी, खुशखबरी, खुशखबरी

आनन्द की बेला आ गई
क्योंकि

दिनांक 7 सितम्बर 2018

विश्व समभाव दिवस के शुभावसर पर
सम्पन्न होने जा रहा है

मानव के नैतिक व चारित्रिक उत्थान हेतु
सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि०) द्वारा वैश्विक स्तर पर
कराए जा रहे

4th अंतर्राष्ट्रीय मानवता ई-ओलम्पियाड-2018

का

पुरस्कार वितरण समारोह

इस शुभावसर पर आप सब अपने परिवारजनों,
सगे-सम्बन्धियों सहित

फरीदाबाद भूपानी-लालपुर रोड स्थित
सतयुग दर्शन वसुंधरा
के विशाल सभागार में सादर आमंत्रित हैं।

सभी से निवेदन है कि पुरस्कार वितरण का आनन्द

दैनिक जागरण नई दिल्ली, 1 सितंबर 2018

मानवता ई-ओलंपियाड की होगी ऑनलाइन परीक्षा

सतयुग दर्शन ट्रस्ट की अंतरराष्ट्रीय मानवता ई-ओलंपियाड 2018 में भाग लेते विद्यार्थी। • जागरण

जासं, फरीदाबाद: सतयुग दर्शन ट्रस्ट की ओर से अंतरराष्ट्रीय मानवता ई-ओलंपियाड 2018 का आयोजन किया जा रहा है। ट्रस्ट के कोर्डिनेटर ने बताया कि इसके तहत 15 मिनट की ऑनलाइन परीक्षा देनी होती है। इस परीक्षा को किसी भी उम्र, जाति, वर्ग या संप्रदाय का कोई भी व्यक्ति दे सकता है।

ऑनलाइन परीक्षा में कुल 25 बहु विकल्पीय रुचिकर चित्रात्मक प्रश्नों का जवाब देना होता है। ये ऑनलाइन परीक्षा हिंदी अथवा अंग्रेजी किसी भी माध्यम में दी जा सकती है। परीक्षा देने के बाद तुरंत अपना परिणाम और ई-प्रमाण पत्र प्राप्त किया जा सकता है। इस परीक्षा को निःशुल्क रखा गया है। टॉप एक हजार विजेताओं को आकर्षक पुरस्कार दिए जाएंगे। सात सितंबर को सभाभाव दिवस के मौके पर सतयुग दर्शन ट्रस्ट की ओर से ये सभी पुरस्कार वितरित किए जाएंगे। कोर्डिनेटर ने बताया कि ट्रस्ट की ओर से पिछले तीन वर्षों से यह परीक्षा ऑफलाइन आयोजित की जा रही थी। कागज की बचत करने और डिजिटल इंडिया से प्रेरित होकर इस बार इस परीक्षा को पूरी तरह ऑनलाइन रखा गया है।

SATYUG DARSHAN TRUST (REGD.)

ALLEVIATING PHYSICAL, MENTAL AND SPIRITUAL SUFFERINGS OF HUMAN BEINGS.

info@satyugdarshantrust.org | www.satyugdarshantrust.org

INSTITUTIONS UNDER THE AEGIS OF SATYUG DARSHAN TRUST (REGD.)

SATYUG DARSHAN CHARITABLE DISPENSARIES & LABORATORIES

Multidiscipline dispensaries, labs & diagnostic centres spread in 15 cities

www.satyugdarshandispensaries.org

SATYUG DARSHAN VIDYALAYA

Nursery-XII, Co-Ed. English medium, residential & day boarding school. Affiliated to CBSE.

www.satyugdarshanvidyalaya.net

SATYUG DARSHAN INSTITUTE OF EDUCATION & RESEARCH

B.Ed. College for Girls. Affiliated to CRS University, Jind.

www.sdier.org

SATYUG DARSHAN INSTITUTE OF ENGINEERING & TECHNOLOGY

UG College, offering B.Tech. and BBA courses. Co-Ed., residential & day boarding facilities. Affiliated to J.C.Bose University of Science & Technology, YMCA, Faridabad.

www.satyug.edu.in

DHYAN KAKSH

World's first School of Equanimity & Even-sightedness. It is open to all age and gender.

www.schoolofequanimity.com

SATYUG DARSHAN SANGEET KALA KENDRA

Imparting true teachings of music and dance, open to all age and gender. Present in 15 cities. Affiliated to Prayag Sangeet Samiti, Allahabad.

www.satyugdarshansangeet.org

INITIATIVES OF SATYUG DARSHAN TRUST (REGD.) ON HUMANITY AND ETHICS

INTERNATIONAL HUMANITY OLYMPIAD

www.humanityolympiad.org

HUMANITY DEVELOPMENT CLUB

www.awakehumanity.org